तीन नाटक: तीन आयाम (नाट्य संग्रह)

वीणा सहाय

Book on the Boat

Book on the Boat

प्रथम प्रकाशन
किताब बाई बुक ऑन द बोट पब्लिशर (Kitab by Book on the boat publisher)

रजिस्टर्ड कार्यालय: मंतन ग्लोबल प्राइवेट लिमिटेड, 108, शिवालिक कॉलोनी, अंबाला शहर, अंबाला, हरियाणा, भारत, १३४००३
शाखा कार्यालय: रामबाग रोड, बरनाला शहर, पंजाब, भारत, १४८१०१
कॉर्पोरेट कार्यालय: सुषमा इनफिनिटम बिल्डिंग, नंबर-४३, छठी मंजिल, चंडीगढ़-दिल्ली रोड, राष्ट्रीय राजमार्ग-२२, जीरकपुर, पंजाब १४०६०३

तीन नाटक: तीन आयाम (नाट्य संग्रह)
Copyright ©वीणा सहाय@2026
भाषा: हिंदी
ISBN Print Book – 978-93-89785-39-5

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक, जिसमें फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली शामिल है, पुनरुत्पादित या प्रेषित नहीं किया जा सकता है – सिवाय एक समीक्षक द्वारा जो किसी पत्रिका, समाचार पत्र या वेब पर छपने के लिए समीक्षा में संक्षिप्त अंश उद्धृत कर सकता है – कॉपीराइट स्वामी से लिखित अनुमति के बिना। हालाँकि लेखक और प्रकाशक ने इस पुस्तक में निहित जानकारी की सटीकता और पूर्णता सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किया है, हम इसमें त्रुटियों, अशुद्धियों, चूक या किसी भी विसंगतियों के लिए कोई जिम्मेदारी नहीं लेते हैं अगर लोगों, स्थानों या संगठनों पर कोई भी अपमान अनजाने में किया गया है।

भारत में मुद्रित

हाथ नहीं मिलाना

लेखिका : वीणा सहाय

नाटक का नाम : हाथ नहीं मिलाना

लेखक का नाम : वीणा सहाय

लेखक का पता :

22 दयाल इन्क्लेव

गैलेक्सी अस्पताल के सामने

महमूरगंज

वाराणसी 221010

मोबाइल नंबर : 9839073869

ईमेल आई डी : veenasahay 18021955@gmail lcom

3। लेखक के अन्य दो नाटकों के नामः

(1) नाथ संप्रदाय

(2) 26/11

आत्म परिचय : संलग्न

4। नाटक में पात्रों की संख्या

पुरुष पात्र – 1

महिला पात्र-4

5। नाटक का विषय: वैश्विक महामारी कोविड 19। जिसने हम में से कितनों के अपनों को छीना, कुछ अज्ञानता वश, कुछ दवा के अभाव में, कुछ इलाज के अभाव में। और कुछ दर्द को सहन नहीं करने के कारण चले गए। साल 2020 एक ऐसा झंझावात लेकर आया जिसमें हम सभी

स्तब्ध हो गए थे। ज़िन्दगी चल तो रही थी। पर एक अंधकार में। बस उसी को अनुभव कर लिखा गया एक छोटा सा प्रयास है नाटक- हाथ नहीं मिलाना।

डॉ निखिल- जो कि नेहा के पति हैं, अपनी सारी ज़िम्मेदारियों को संभालते हुए, अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रहते हैं।

नेहा- निखिल की पत्नी, जो एक कुशल गृहणी है, सजग माता, पुत्री और पत्नी है। वर्तमान झंझावात में विचलित तो होती है। पर एक विश्वांस का मुखौटा हर समय ओढ़े रहती है।

माँ- नेहा की माँ। अदृश्य डर से डरी, सहमी हैं। पर बच्चों के लिए ढाल बनकर खड़ी रहती हैं। चिंकी- नेहा और निखिल की बड़ी बेटी है। बहुत ही सम़झदार और जिज्ञासु है।

रिंकी- नेहा की छोटी बेटी जो बालसुलभ जिज्ञासा से ओतप्रोत है।

6. शपथ पत्र: यह मेरा अमंचित और अप्रकाशित नाटक है

वीणा सहाय

नाटक

हाथ नहीं मिलाना

अवधि - 90 मिनट

पात्रः-

1. डाक्टर : निखिल (पति) उम्र 40 वर्ष
2. नेहा : (पत्नी) उम्र 35 वर्ष
3. माँ : उम्र 70 वर्ष
4. चिंकी : (पुत्री) उम्र 12वर्ष
5. रिंकी : (पुत्री) उम्र 7 वर्ष

सेटः- ड्राइंग रूम, उसी से सटे 3 दरवाजे हैं। जो एक तरफबेड रूम, एक किचन और एक बाहर की ओर जाता है।

ड्राइंग रूम में एक तरफ ड्राइंग रूम सेट और एक तरफ डाइनिंग रूम सेट।

प्रथम दृश्य

[दिन का समय]

(दो बच्चे स्कूल से घर आते हैं, अपना बैग एक ओर फेंकते हैं, माँ के पास जाकर अपने -अपने स्कूल की गतिविधियों के बारे में बताते हैं।)

रिंकी : माँ मेरे स्कूल में वार्षिकोत्सव की तैयारी शुरू हो गई है, और मैडम ने पूछा कौन-कौन गा सकता है, मुझे कोई गाना सुनाने को कहा, नेहा बब्बर, कुशल सब ने सुनाया । पता है माँ। (दुखी होकर) मैंने जब सुनाया तो मैम ने कहा कि तुम कोई कविता पढ़ लेना। पर मैम ने ऐसा क्यों कहा? मैं तो कितना अच्छा गाती हूँ न, सुना रही हूँ। (बेसुरे स्वर में) तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो..... । अब बताओ मैंने कैसा गाया?

नेहा (माँ) : (मंद मंद उसके बेशरपन पर हँसती है।) हाँ बच्चा, पर सबका गाने में नहीं रखा जा सकता है न। कुछ कविता , कुछ नृत्य, कुछ नाटक में — सभी का भाषा लेना है न। और चिंकी, तू बता तेरा चुनाव किस में हुआ है?

चिंकी : मेरा चुनाव नाटक के लिए हुआ है। शेक्सपियर का नाटक है। "मैकबेथ" और उसमें लेडी मैकबेथ का किरदार करना है। पर माँ, ये तो निगेटिव कैरेक्टर है न? क्यों मुझे ही चुना?

नेहा : इसलिए कि तुम्हारी साधारण बोल चाल की भाषा में उतार चढ़ाव काफी अच्छा है। और इस कैरेक्टर में ये बहुत जरूरी है।

चिंकी : माँ, तुमने पढ़ा है?

नेहा: हाँ बेटा, मैंने पढ़ा भी है। और कॉलेज में किया भी था। और तुम्हारे पापा मैकबेथ बने थे, पर पुरस्कार मुझे मिला था।

चिंकी: (खुशी से पूरे घर में चक्कर लगाने लगती है।) तब तो माँ तुम बहुत अच्छी गाईड बनोगी।

रिंकी: और मुझे कौन गाईड करेगा? कोई बात नहीं, मैं पापा से कविता लिखवा लूंगी और पढ़ भी लूंगी । मैडम ने कहा भी है। कि तुम कविता पढ़ना।

नेहा: हाँ बेटा क्यों नहीं? अब चलो, तुम लोग कपड़े बदलो और हाथ मुँह धोकर आओ। मैं दूध लेकर आती हूँ, साथ ही तुम लोगों का फेवरेट गाजर का हलवा।

रिंकी: माँ, पर मुझे दीदी से ज्यादा हलवा देना, नहीं तो दीदी जल्दी से अपना खाकर मेरा लेने लगती है।

चिंकी: और क्यों न लूं? तू टीवी देखने बैठ जाती है। और मै तेरा इसलिए ख़त्म करती हूँ। कई तुम जल्दी खाकर खेलने चलो, वरना होमवर्क करने में देर हो जाती है। फिर सुबह मैडम की डांट, समझी?

रिंकी: आज देखना मैं सब खा लूंगी और पापा के आने से पहले होमवर्क कर, खाना खाकर तैयार हो जाऊँगी। ताकि बेड में जाने से पहले पापा को गुडनाइट बोलूं।

चिंकी: माँ, आज कल पापा अस्पताल में इतनी देर से क्यों आते हैं? क्या काम बहुत ज्यादा है या मरीज ज्यादा हैं?

नेहा: (नजरंदाज करते हुए।) बाप रे ,जब से आई हो तुम लोग बकबक करती जा रही हो । एक मिनट शांत भी रहोगी ? जब तक तुम लोग नही आती , घर कितना शांत रहता है ।

रिंकी: (माँ को प्यार करते हुए।) माँ एक बात पूछूं गुस्साना मत प्लीज, आज भी पापा क्या देरी से आएंगे?

नेहा: चल जा जल्दी , नहीं तो मैं कुछ भी जवाब नहीं दूंगी।

[प्रकाश मद्धिम]

द्वितीय दृश्य

[सुबह का समय - चिड़ियों की चहचहाहट

सभी अपने - अपने काम में व्यस्त । निखिल पेपर पढ़ रहे हैं। नेहा घर के अंदर काम कर रही है। बच्चे स्कूल की तैयारी में व्यस्त।]

चिंकी: पापा आज कल इतनी देर से घर क्यों आते हो? क्या रोज मीटिंग होती है?

निखिल: हां बेटा, कुछ समस्या आने वाली है। उसी की तैयारी चल रही है। एक वाइरस आया है- कोरोना। जो बहुत तेजी से फैल रहा है । जिससे कैसे बचाव करना है। उसी पर रोज वाद विवाद चलता रहता है। अच्छा ये बताओ, तुम्हारे स्कूल में तैयारी कैसी चल रही है?

रिंकी: टीचर ने मुझे गाना से निकाल दिया है। मैं कविता पढ़ूंगी।

दीदी तो नाटक में भाग ले रही है।

निखिल: अरे वाह, मैं और तुम्हारी मम्मी भी नाटक करते थे। और पुरस्कार पाते थे। शेक्सपियर का नाटक किया था हम लोगों ने । तुम्हारी मम्मी अच्छी गाईड बनेगी।

रिंकी: और कविता पढ़ना मुझे कौन सिखाएगा? सब दीदी की ही हेल्प करते हैं, मेरी कोई नहीं।

नेहा: बस रोना शुरू, कहा न मैं दोनों को बताउंगी।

रिंकी: नहीं, पापा मुझे कविता सिखाएंगे।

निखिल: बेटा मैं थोड़ा व्यस्त हूँ। मम्मा आपको पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेई जी की कविता है, वो सिखाएगी।नेहा, तुम बता देना।

रिंकी: अटल जी कौन हैं?

चिंकी: अरे! तुम नहीं जानती !! हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री थे। उन्होंने बहुत सी कविताएँ लिखी हैं। दो तीन दिनों पहले हमने जो फिल्म देखी थी न, परमाणु परीक्षण वाली, जिसका नाम था।

'परमाणु' यह घटना इन्ही के कार्यकाल में हुई थी।

निखिल: नेहा......, लौली और बबली वाली कविता याद करवा देना। (चाय लेकर नेहा का प्रवेश।)

नेहा: आज मैने अखबार में देखा। कि चीन में वायरस की वजह से काफी लोग मर रहे हैं। और इटली में भी।

निखिल: हां, पर अभी भारत में नहीं आया है। पर अगर संक्रमित व्यक्ति छींके या खांसे या पास में हो, तो सीधा संक्रमण का काफी रिस्क होता है। और संक्रमित व्यक्ति के खांसने या छींकने के जो कण बिखरते हैं। वो कम से कम 6 घंटे और अधिक से अधिक 3-4 दिनों तक सतह पर मौजूद रहते हैं। इसलिए सभी को हाथ मुंह धोते रहना है। और चेहरा, मुंह, नांक नहीं छूना है। मास्क लगाना है।

रिंकी: ये कहाँ से आया है पापा?

निखिल: चीन के हुबई प्रांत के वुहान शहर से ।

रिंकी: (आंखे बड़ी बड़ी करके) पर कैसे पापा?

निखिल: इसका कारण तो अभी तक नहीं पता लग पाया है, पर वहाँ अचानक लोग सांस की तकलीफ और बुखार से मरने लगे। तब, शक किया गया। कि संभवतः यह किसी वाइरस के कारण है। क्योंकि एकसाथ इतने लोगों का मरना चिंतनीय विषय है। तब WHO की टीम ने रिसर्च करना शुरू किया। और पाया कि यह एक खतरनाक वाइरस के कारण है।

रिंकी: यह WHO क्या है?

निखिलः World Health Onganization यानि विश्व स्वास्थ्य संगठन । जिसका काम है। सारे गहन विषयों पर रिसर्च करना।

नेहाः रिसर्च तो चल ही रहा होगा।

निखिलः दुनिया भर में इस बात की जद्दोजहद चल रही है। कि यह वाइरस जिसका नाम कोरोना है, आखिर किस जानवर से फैला? कोई बताता है। कि चींटी खाने वाले जानवर पेंगोलिन ने चमगादड़ और मनुष्यों में इस वाइरस को फैलाया है। दूसरे रिसर्च के मुताबिक चमगादड़ भी एक प्राकृतिक स्रोत है। लेकिन चमगादड़ से मनुष्यों में फैलने के बीच एक होस्ट की जरुरत होती है।

नेहाः क्या भारत में भी कोरोना होने की संभावना है?

निखिलः हाँ, हो सकती है। जब हवा में है तो हवा से कहीं भी कभी भी आ सकती है। इसलिए हाथ, मुंह धोते रहना है, दूरी बनाकर रखना है , मास्क लगाना है। और सामाजिक सरोकारों से दूर रहना है ।

नेहाः इससे बचने का और क्या उपाय है?

निखिलः अब बस करो। आज के लिए इतना ही काफ़ी है। मैं तैयार होने चला। अस्पताल पहुँचने में देर हो जाती है।

रिंकी: पापा, फिर से चले? और मेरी कविता का क्या होगा। मम्मा फिर अपने काम में व्यस्त हो जाएंगी। सिर्फ बताती हूँ, बताती हूँ करती रहेंगी।

निखिलः मैं चलता हूँ। सब लोग अपना ध्यान रखना। फिर मिलता हूँ।

(गाड़ी की आवाज़)

नेहाः चलो, कविता लिखवा दूं। अब तुम्हें तो पता हो ही गया है। कि अटल जी कितने सरल व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। उनका स्नेह सभी पर समान रूप से था। अपने पप्पी से बहुत प्यार करते थे।

उनपर कविता है,
बबली लौली कुत्ते दो
कुत्ते नहीं खिलौने दो
लम्बे लम्बे बालों वाले
फूले पिचके गालों वाले।

बबली माँ है, लौली बेटा
माँ सीधी है, बेटा खोटा
पर दोनों में प्यार बहुत है
प्यार बहुत, तकरार बहुत है
लड़ते हैं इन्सानों जैसे
गुस्से में हैवानों जैसे
आतिशबाजी से घबराते
बिस्तर के नीचे छुप जाते
एक दिवाली ऐसी आई
बबली जी ने दौड़ लगाई
बदहवास हो घर से भागी
तोड़े रिश्ते, ममता त्यागी,
कोई सज्जन मिले सड़क पर
मोटर में ले गए उठाकर

रपट पुलिस में दर्ज कराई
अखबारों में खबर छपाई
लौली जी रह गए अकेले
किससे झगड़ें किससे खेलें
बजी अचानक घंटी टन टन
उधर फोन में बोले सज्जन
क्या कोई कुत्ता खोया है?
रंग कैसा, कैसा हुलिया है
बबली जी का रंग बखाना, ढंग बखाना।

बोले आप तुरंत आइए
परेशान हूँ, रहम खाइए
जब से आई है, रोती है
न खाती है न सोती है।

मोटर लेकर सरपट भागे
नहीं देखते पीछे आगे
जा पहुंचे जो पता बताया
घर घंटी बटन दबाया
बबली की आवाज़ सुन पड़ी

द्वार खुला, सामने आ खड़ी

बदहवास सी सिमटी सिमटी

पल भर ठिठक, फिर आ लिपटी।

रिंकी: मम्मा, बहुत सुंदर कविता है। मैं याद कर के आपको सुनाउंगी। (दौड़ती हुई अपने कमरे में चली जाती है।

[प्रकाश मद्धिम]

तृतीय दृश्य

[नेहा अपना काम कर रही है। और रेडियो सुनती रहती है। बच्चे स्कूल गए हैं। और निखिल अस्पताल काल बेल की आवाज़ माँ का प्रवेश।]

माँ: नेहा, आज क्या बना रही हो?

नेहा: माँ, तुम ! प्रणाम! आओ।

माँ: बहुत दिनों से तुम लोगों का समाचार नही मिला, तो सोचा चलो हम ही हो लेते हैं।

नेहा: हां माँ, आज कल बच्चे स्कूल के वार्षिकोत्सव की तैयारी मे व्यस्त हैं। रोज़ आकर बक बक करते रहते हैं। दोनों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया है। लड़ाई झगड़ा उसी में होता रहता है।

माँ: क्यों?

नेहा: चिंकी को तो तुम जानती ही हो। अपने काम में कितनी सजग रहती है। जब से नाटक के लिये चयन हुआ है, तब से हर समय थोड़ी थोड़ी देर पर लम्बे लम्बे प्रश्न पूछती रहती है। और मुझे उन प्रश्नों के जवाब ढूंढने में उलझे रहना पड़ता है।

माँ: तुम एक अच्छी गाईड हो उन दोनों की। फिर निखिल इतना व्यस्त रहते हैं, अस्पताल की वजह से तुम्हें समय ही नहीं दे पाते। तो बच्चों को क्या खाक दे पाएंगे। वैसे अच्छा टाईम पास जॉब है तुम्हारा। रिंकी क्या कर रही है। प्रोग्राम में?

नेहा: कविता पढ़ रही है स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी की कविता है। न, उसे ही बता रही हूँ।

माँ: आज समाचार दे रहा था। कि कोई वाइरस बहुत तेजी से फैल रहा है। चीन के वुहान शहर में सैकड़ों लोग मर रहे हैं। फिर इटली में भी फैल रहा है। भारत में भी इसकी संभवना व्यक्त की जा रही है। निखिल ने कुछ बताया क्या तुझे?

नेहा: नहीं माँ, अभी भारत में तो नहीं आया है। पर जो लोग विदेश से आ रहे हैं। हवाई यात्रा करके या जहाज से, उनसे आ सकता है। तुमने होली की खरीदारी कर ली क्या? अब तो बाज़ार जाने में भी डर लग रहा है। निखिल भी मना कर रहे थे।

माँ: अभी नहीं । कुछ काम था क्या? शायद एक दो दिनों में जाऊँ। सोचती हूँ। इस बार गुझिया नहीं बनाऊँ। अब बैठ कर उतना काम नहीं हो पाता है। आने जाने वाले मेहमानों के लिए थोड़ा बाज़ार से लाकर रख लूंगी ।

नेहा: हां, देश की मौजूदा स्थिति को देखते हुए लगता है। इसबार होली भी बहुत धूमधाम से नहीं मनेगी। प्रधानमंत्री ने भी होली नहीं खेलने को कहा है। बच्चों के प्रोग्राम की तैयारी चल रही है। उनके ड्रेस बनवाने हैं। भागदौड़ करनी पड़ती है। पर डर लगता है। अच्छा, अब चलती हूँ खाना बनाने। निखिल आने वाले ही होंगे। तुम भी खाना खाकर ही जाना।

(काल बेल की आवाज़, निखिल का प्रवेश।)

निखिलः अरे माँ, आप कब आई? कैसी हैं? बाहर थोड़ा कम निकला कीजिए। महामारी के बारे में सुना है न? आज से अस्पताल में थोड़ी थोड़ी तैयारी शुरू हो गई, कोरोना वाइरस को लेकर ।

माँः सुना है, हवा में है यह वाइरस । ध्यान रखना, निखिल । वैसे तो तुम खुद ही डाक्टर हो, तुम्हें क्या बताना। पर फिर भी..... (भावुक हो जाती है।)

निखिलः हाँ माँ जी। अरे नेहा, आज खाने में क्या क्या बना है? भिंडी की भुजिया और बेसन की सब्जीं? अरे माँ जी आईं हैं अचार पापड़ भी तो होना चाहिए ना?

नेहाः हां बाबा, सब लेकर आती हूँ। तुम तो घोड़े पर सवार होकर आते हो अस्पताल से। खाया, 10 मिनट आराम फिर वापस ।

निखिलः एक डाक्टर की ज़िन्दगी ऐसी ही होती है, मैडम।

(स्कूल से रिंकी चिंकी का प्रवेश)

रिंकी: अरे नानी माँ! आप भी मेरे स्कूल के प्रोग्राम देखने आएंगी न?

माँः हां, बेटा, जरूर आऊँगी।

चिंकी: माँ, मुझे सफ़ेद गाऊन चाहिए। मेरा ड्रेस वही है। आज मैडम ने बहुत सुन्दर मुकुट तैयार करवाया है। मम्मा, मैं तुम्हें डायलाग सुनाऊँ?

माँ: अरे बच्चा, अभी हाथ मुंह धोकर, कपड़े बदलो। फिर दूध पी लो । फिर उसके बाद ।

रिंकी: मम्मी, आज मैडम भी स्कूल में बता रही थीं। कि हम सभी को थोड़ी - थोड़ी देर पर हाथ धोते रहना चाहिए। हाथ नहीं मिलाना है । सैनेटाइज़र का प्रयोग करना है। एक बीमारी है। न कोरोना वाइरस, शायद भारत में भी आ जाए। होली भी नहीं खेलना है। इसबार ।

चिंकी: मम्मा, मेरी डायरी में तुम लोगों के लिए इन्विटेशन आया है, आ जाना मम्मा और पापा को भी लाना। नानी माँ आप भी प्लीज़ प्लीज़ - प्लीज़।

माँः मम्मी और पापा दो थोड़े ही हैं। कोई एक भी भी आ गया तो दोनों हो गए। चलो, जल्दी तैयार हो जाओ। होली के कपड़े भी लेने हैं ।

रिंकीः मम्मा, ये बताओ। कि हम होलिका क्यों जलाते हैं? क्यों कचरा इकट्ठा करते हैं, उसके ऊपर भगवान की मूर्ति रख देते हैं? और तुम कहती हो कि भगवान को हमेशा पवित्र स्थान पर रखना चाहिए ।

माँ: अरे बाबा, तुम लोगों के कितने सवाल रहते हैं? हम होलिका इसलिए जलाते हैं। कि उस दिन हिरण्यकश्यपु नामक राजा अपने पुत्र प्रह्लाद को अग्नि में जलाकर राख करना चाहता था, क्योंकि उनका कहना था। कि मैं ही भगवान हूँ। और सिर्फ मेरी पूजा होनी चाहिए। पर उनके पुत्र प्रह्लाद हमेशा नारायण नारायण की माला जपते थे। होलिका वाले दिन जब उन्हें अग्नि को समर्पित करने जा रहे थे। तो उनकी बुआ जिनका नाम होलिका था, गोद में लेकर बैठ गई। फिर आग लगी तो होलिका जल गई और प्रह्लाद बच गए ।

यानि बुराई पर अच्छाई की विजय होती है। और इसी विजय को होली के रूप में हम मनाते है।

नेहा : चलो बच्चों। कल तुम्हारे स्कूल भी जाना है। सारी तैयारी आज ही कर लेंगे । कल समय नहीं मिल पाएगा । माँ, निखिल के लिए पीले रंग का कुरता लेना है। और बच्चों के लिए चिकेन वर्क का सलवार समीज। मैं भी वही ले लूंगी। पर मां, तुम तो सलवार समीज नहीं पहनोगी। फिर साड़ी चिकेन वाली ले लेती हूँ। निखिलः अच्छा सब लोग बाज़ार जाओ। मैं भी अस्पताल चला। पर सब लोग ध्यान रखना। मास्क लगाकर जाना। हाथ सैनिटाइज़ करते रहना। बच्चों, इधर उधर नहीं छूना।

चिंकी: मम्मा, मेरी डायरी में तुम लोगों के लिए इन्विटेशन आया है, आ जाना मम्मा और पापा को भी लाना। नानी माँ आप भी प्लीज़ प्लीज़ - प्लीज़।

माँ: मम्मी और पापा दो थोड़े ही हैं। कोई एक भी भी आ गया तो दोनों हो गए। चलो, जल्दी तैयार हो जाओ। होली के कपड़े भी लेने हैं ।

रिंकी: मम्मा, ये बताओ। कि हम होलिका क्यों जलाते हैं? क्यों कचरा इकट्ठा करते हैं, उसके ऊपर भगवान की मूर्ति रख देते हैं? और तुम कहती हो कि भगवान को हमेशा पवित्र स्थान पर रखना चाहिए ।

माँ: अरे बाबा, तुम लोगों के कितने सवाल रहते हैं? हम होलिका इसलिए जलाते हैं। कि उस दिन हिरण्यकश्यपु नामक राजा अपने पुत्र प्रह्लाद को अग्नि में जलाकर राख करना चाहता था, क्योंकि उनका कहना था। कि मैं ही भगवान हूँ। और सिर्फ मेरी पूजा होनी चाहिए। पर उनके पुत्र प्रह्लाद हमेशा नारायण नारायण की माला जपते थे। होलिका वाले दिन जब उन्हें अग्नि को समर्पित करने जा रहे थे। तो उनकी बुआ जिनका नाम होलिका था, गोद में लेकर बैठ गई। फिर आग लगी तो होलिका जल गई और प्रह्लाद बच गए ।

यानि बुराई पर अच्छाई की विजय होती है। और इसी विजय को होली के रूप में हम मनाते है।

नेहा : चलो बच्चों। कल तुम्हारे स्कूल भी जाना है। सारी तैयारी आज ही कर लेंगे । कल समय नहीं मिल पाएगा । माँ, निखिल के लिए पीले रंग का कुरता लेना है। और बच्चों के लिए चिकेन वर्क का सलवार समीज। मैं भी वही ले लूंगी। पर मां, तुम तो सलवार समीज नहीं पहनोगी। फिर साड़ी चिकेन वाली ले लेती हूँ। निखिलः अच्छा सब लोग बाज़ार जाओ। मैं भी अस्पताल चला। पर सब लोग ध्यान रखना। मास्क लगाकर जाना। हाथ सैनिटाइज़ करते रहना। बच्चों, इधर उधर नहीं छूना।

निखिलः हाँ, पापा आ गए। अब बताओ तुम लोगों का प्रोग्राम कैसा रहा? अभी मुझसे सटना नहीं। मैं हाथ मुंह धोकर आता हूँ।

नेहाः (चाय लेकर आती है) भारत में भी यह वाइरस आ गया है क्या?

निखिलः हाँ। पहला केस भारत में तो जनवरी में ही आ गया था। पर पहली मौत 13 मार्च को कर्नाटक के कलबुर्गी शहर में हुई। वह व्यक्ति सउदी अरब से उमरा कर के आया था। इससे सरकार भी सतर्क हो गई है और कोई ठोस निर्णय लेने के लिए कदम उठाने वाली है।

नेहाः इस बार हम लोग भी होली नहीं मनाएंगे। बच्चों को भी बाहर खेलने के लिए नहीं भेजेंगे।

निखिलः इसे कोविद 19 के नाम से जाना जा रहा है।

नेहाः इसकी दवा क्या है?

निखिलः अभी तक तो कोई दवा नहीं आई है, वैक्सीन बनाया जा रहा है। पर उसे बनने में तो समय लगेगा। दवा यही है। कि सोशल डिस्टेंस बना कर रखें, हाथ मुंह धोते रहें, मुंह पर मास्क लगाकर रखें और ज़रा भी सर्दी खांसी बुखार का आभास हो तो डाक्टर के पास जाएं। अगर जांच में कोरोना पाज़ीटिव पाया गया। तो उसे 14 दिनों तक आइसोलेट (अलगाव) कर के रहना होगा। ठंडी चीजों से परहेज करना है। गर्म पानी पीना होगा। वैसे सरकार की व्यवस्था भी काफी अच्छी है।

चिंकी: पापा, आज आइसक्रीम खाएंगे न?

निखिलः नहीं बेटा, ठंडी चीजों से बचना है।

रिंकी: पर क्यों पापा?

निखिलः कोरोना एक संक्रमित बीमारी है, इसमें लक्षण सर्दी से शुरू होता है। और बुखार, कफ़, (म्यूकस) गले में भर जाता है। फिर धीरे धीरे गाढ़ा

होने लगता है। और सांस लेने में तकलीफ पैदा करता है, जिससे मौतें हो रही हैं। इसलिए भाप भी लेते रहना है।

चिंकी: पापा, कोरोना क्या जानवरों में भी होता है?

निखिल: मेरी गुड़िया, अभी तक ऐसी रिपोर्ट नहीं आई है। पर हां, न्यूयॉर्क के ज़ू में एक बाघिन और ब्राजील के जू में एक शेरनी को हुआ है। वो इसलिए कि उनके जो देखभाल करते थे, वो कोरोना संक्रमित थे। और मैने बताया न कि संक्रमित लोगों से दूर रहना है।

रिंकी: पर पापा, तुम्हारे अस्पताल में कोरोना संक्रमित आ जाएं तो तुम कैसे बचोगे?

निखिल: PPE किट पहन कर। हो सकता है कि स्कूल कालेज सब कोरोना की वजह से बंद हो जाए। और कुछ दिनों के बाद खुले।

चिंकी: चलो मजा आ गया। खूब खेलेंगे, मस्ती करेंगे और एग्ज़ाम भी देरी से होंगे।

रिंकी: अरे नहीं, अब हम लोगो को मम्मी पूरा कोर्स खत्म करवा देगी।

चिंकी: कोरोना वाइरस क्या घर पर आ सकता है पापा? कैसा होता है?

निखिल: बताया न, वो हवा में है। और अगर हवा के साथ आस पास कहीं आ गया हो, तो आ सकता है न। इसलिए किसी के नज़दीक नहीं जाना है - सोशल डिस्टेंस में रहना है। ये ज़िंदगी की पहली रेस होगी जिसमें रुकने वाला जीतेगा। अच्छा, चलो खाना खाया जाए। नहीं तो मेरी बिग बी, यानि तुम्हारी मम्मा नाराज़ हो जाएंगी।

रिंकी: आज मम्मा ने मेरी पसंद की पनीर की सब्जी बनाई है।

चिंकी: प्रधानमंत्री ने कहा है। कि कल एक दिन का जनता कर्फ्यू लगेगा और सबको अपने अपने घरों में रहकर शाम पांच बजे पांच मिनट तक

ताली, थाली, शंख या घंटी बजाना है। इससे क्या होगा मम्मी, और क्यों बजाना है?

निखिलः इस कठिन समय में हमारे देश में जो डाक्टर्स, पुलिस और सफ़ाई कर्मचारी अपना काम कर रहे हैं, बिना अपने जीवन की परवाह किए हुए, उनको हमारा सम्मान समर्पित होगा। फिर इससे विशाल आवृत्ति अनुवाद उत्पन्न होगा, जब इन चीजों को बजाया जाता है। तो वातावरण में कम्पन पैदा होता है, जो वायुमंडल में बहुत दूर तक जाता है। इस कम्पन का फ़ायदा यह है। कि क्षेत्र में आने वाले सभी जीवाणु, विषाणु और सूक्ष्म जीव, सब नष्ट हो जाते हैं, जिससे वातावरण शुद्ध हो जाता है। और यह कोरोना से लड़ने के लिए एक कदम होगा।

चिंकी: आज मैं शंख बजाउंगी, रिंकी थाली और तुम घंटी। पापा क्या बजाएंगे?

निखिलः पर बेटा, मुझे तो अस्पताल जाना पड़ेगा।

रिंकी: पापा, हाथ में सैनिटाइज़र लगाते रहना। वैसे PPE किट में ग्लव्स तो होगा न।

निखिलः हाँ, बिटिया रानी। कितनी चिंता करती हो तुम सब। हमारे प्रधानमंत्री जो भी निर्णय ले रहे हैं, सब सही ले रहे हैं। बचाव कार्य तो किया ही जा रहा है।

चिंकी: शाम को मैं बाहर जाकर शंख बजाउंगी। शिल्पी रौनक के साथ।

नेहाः नहीं, बस अपने घर पर बजाना है। सोशल डिस्टेंस बनाना है न?

नेहाः (सैनेटाइज़र हाथ में लगा रही है) अच्छा, मैं किचन में जा रही हूँ।

रिंकी: नहीं मम्मी, सैनेटाइज़र लगाकर आग के पास नहीं जाना।

रिंकी: पापा, कोरोना के लिए आप जो पी०पी०ई० किट पहनते हैं, उसे कहाँ रखकर आते हैं?

निखिलः उसे अस्पताल के बाहर ही उतार दिया जाता है। और जला दिया जाता है। ताकि इन्फेक्शन बाहर न जाए। अच्छा, अब बस करते हैं। मुझे फ्रेश होकर अस्पताल भी जाना है।

चिंकीः मम्मा, आज मेरा आनलाइन क्लास है। हिन्दी, इंग्लिश, -साइंस, मैथ और क्राफ्ट।

रिंकीः मम्मा क्या बताएंगी। मैडम जब सिखाएंगी तो सीख लेना। अभी हम बाहर से सामान ला नहीं सकते। जो भी बनाना होगा वो घर की चीज़ो से ही बनेगा न।

चिंकी: सही बात है।

रिंकी: पापा, एक सवाल। क्या मरीज का इलाज भी पी०पी०ई० किट में ही करते हो?

निखिल : हां, बेटा / नेहा, अपने शील नगर वाले चाचा जी हैं। न, वो परसों एडमिट हुए। और आज जब मैं आ रहा था तो चाची जी को भी लोग लेकर आए थे। उनको भी सांस लेने में तकलीफ हो रही थी।

नेहाः दोनों की उम्र 85 प्लस होगी नं०?

निखिलः हां। बुजुर्गों को तो बहुत बच के रहना है। क्योंकि उन्हें इन्फेक्शन जल्द लग सकता है। अच्छा रिंकी अपनी कविता सुनाओ जल्दी से। फिर मुझे अस्पताल जाना है।

(रिंकी कविता सुनाती है।)

[तालियों की गड़गड़ाहट]

(प्रकाश मद्धिम)

पांचवा दृश्य

[सुबह का समय नेहा और निखिल ड्राइंग रूम में चाय पी रहे हैं। और बातें कर रहे हैं।]

निखिलः कुछ पैसे निकाल लेना। राशन लेकर रख लेना। सरकार प्रबंध तो कर रही है। पर यह वाइरस इतनी तेजी से फैल रहा है। कि हो सकता है। कि कुछ ठोस कदम उठाने पडे।

नेहाः ठोस कदम यानि?

निखिलः कर्फ्यू, धारा 144, इमरजेंसी, कुछ भी हो सकता है। इसके रोकथाम का एक ही उपाय है सामाजिक दूरी यानि सोशल डिस्टेंस। पर सभी जनता, इस बात को समझे तब न। बाजार मंदिर मस्जिद जहाँ भी देखो वैसी ही भीड़ है। बार बार बताया जा रहा है कि वाइरस हवा में है। किसी भी जगह पर भीड़ में इकट्ठे नहीं हों। जरूरत के सब सामान मिलेंगे, पर हां, बेचने का तरीका बदलेगा। इस समय शादी ब्याह अन्य कार्य प्रयोजन, सब पर रोक लगाने जा रही है सरकार। और इन्ही सब मुद्दों पर प्रधानमंत्री जनता को संबोधित करेंगे। अच्छा, नाश्ता तैयार हो तो दे दो। लंच भी पैक कर देना। कोरोना मरीज कल रात भी एक आ गया है, एक पहले से ही भर्ती था। जूनियर डॉक्टर्स तो हैं ही, हम सीनियर्स को भी हो सकता है कि रात की ड्यूटी करनी पड़े। जैसा होगा फोन कर दूंगा।

नेहाः अपना ध्यान रखना।

चिंकी: लव यू पापा।

रिंकीः प्राउड आफ़ यू पापा।

चिंकी लव यू बच्चों। आओ अभी हमारी गोद में बैठ सकती हो।

चिंकीः आज प्रधानमंत्री क्या बोलेंगे? हम लोग फिर थाली.......

रिंकी: अरे नहीं। हर बार थाली ही बजाएंगे क्या? चल, कैरम खेलते हैं।

(सब बैठ कर टीवी देख रहे हैं। प्रधानमंत्री जी की आवाज सुनाई पड़ती है।)

नेहाः चिंकी रिंकी, सुना तुम लोगों ने? प्रधानमंत्री ने कहा- भारत में भी कोविद 19 ने अपना पैर पसारना शुरू कर दिया है, इसलिए सारे हालात को देखते हुए। हमें 21 दिनों तक लौकडाउन में रहना है। यानि सभी अपने अपने घरों में रहें, सामाजिक दूरी बना कर रखें। संक्रमित होने पर तुरंत अस्पताल जाएं और जांच करवाएं। सरकार द्वारा ऐसा प्रबंध किया जा रहा है। कि आपकी जरूरत के सामान जैसे दूध, सब्जी, फल, राशन, दवा-सब आपके घर पहुंचाया जा सके। घर पर भी 6 फीट की दूरी बना कर रहें। गरम पानी का सेवन करें, ठंडी चीजों को कम से कम खाएं पिएँ। आफिस के वर्कर अपने अपने घर पर रहकर वर्क फ्रोम होम से कार्य करें। ध्यान रखें - जान है तो जहान है। मैं सोचती हूँ, निखिल कि माँ अकेले ही रहती हैं। उन्हें यहीं बुला लिया जाए।

निखिलः हां, सही है। मैं फ़ोन कर देता हूँ।

माँ: (फोन पर) मैं आ रही हूँ यहाँ सब ताला बंद कर के। 21 दिन अकेले कैसे रह पाऊंगी?

नेहाः हां माँ, आ जा। यही ठीक रहेगा।

रिंकी: मम्मा, 21 दिनों बाद स्कूल खुलेगा फिर एक्जाम?

नेहाः हां, स्कूल तो नहीं जाना है पर आनलाइन क्लास चलेगा। आपको बैठकर क्लास करना है। टीचर पढ़ाएंगी और सवाल पूछेंगी। आपको एन्सर देना है।

चिंकी: फिर छुट्टी कहाँ? पढ़ाई तो करनी पड़ेगी न?

नेहाः हां बेटा। एक्जाम तक कोरोना की स्थिति गंभीर नहीं रही तो स्कूल में एक्जाम होगा, नहीं तो सरकार तुम लोगो को दूसरे क्लास में प्रमोट कर देगी। बोर्ड एक्जाम में भी यही हो रहा है।

चिंकी: मम्मा, ये कोरोना पूरे वर्ल्ड में है न?

नेहा: नहीं, विश्व के कुछ देश हैं जहाँ अभी तक कोरोना नहीं है। जैसे तुर्किस्तान, उत्तरी कोरिया, यमन और ताजिकिस्तान।

रिंकी: तब तो वहाँ हमारी तरह घरों में बंद नहीं रहते होंगे। खेलते कूदते होंगे। कितना मजा आता होगा न, मम्मा।

चिंकी: चलो अब हम वहीं रहते हैं। पापा कितने बजे आओगे?

निखिल: अस्पताल में कुछ कोरोना के मरीज आ गए हैं। जिससे मेरा काम बढ़ गया है। इसलिए आज रात शायद वहीं ड्यूटी करें और डाक्टर की टीम ज्यादा रही। तो आ भी सकते है। सब लोग अपना ध्यान रखना। मैं चलता हूँ।

(निखिल बाहर निकल जाते हैं)

नेहा (चिड़ियों की चहचहाहट की आवाज़ आ रही है।) : बच्चों देखो कितनी ठंडी ठंडी हवा चल रही है।

चिंकी: मम्मा, स्कूल बंद है न। प्लीज खेलने दो।

रिंकी: वैसे भी हम उठकर क्या करेंगे। स्कूल जाना नहीं है। बोर हो रहे हैं। किसी के साथ खेलना भी तो नहीं है। पढ़ो, पढ़ो ओर सो जाओ।

नेहा: बहुत हुआ। अब पांच मिनट में हाथ मुंह धोकर आओ नहीं तो पिटाई होगी।

रिंकी: चलो, आज मम्मा गुस्से में है। नाश्ता भी गंदा वाला मिलेगा।

चिंकी: और हम शिकायत भी किससे करेंगे। पापा तो रात में घर आएंगे।

(काल बेल की आवाज़। माँ का प्रवेश)

माँ: अब मैं यहीं आ गयी। 21 दिनों तक अकेले रहना संभव नहीं था।

रिंकी: मम्मा, ये कोरंटाइन क्या होता है?

नेहाः इसमें मरीज को 14 दिनों के लिए अलग कर के रखा जाता है। किसी से मिलने नही दिया जाता है। खाना पीना दवा, सब अस्पताल देता है। और इसीलिए पापा का काम बढ़ गया है। पता है? आज प्रधानमंत्री ने कहा है कि रविवार को रात में 9 बजे अपनी अपनी बाल्कनी, मुख्य दरवाजा या छत पर एक या अधिक दीपक जलाना है। और 9 मिनट तक वहाँ रहना है।

चिंकी: इससे क्या होगा?

माँः दीपक जलाने के अनेक वैज्ञानिक पहलू हैं। सूर्यास्त होने के बाद रोगाणु, विषाणु और सूक्ष्म सूक्ष्म कीटाणुओं की शक्ति आठ गुना बढ़ जाती है। दीपक जलाया जाए तो उससे उत्पन्न होने वाली।

नेहाः पापा आएंगे तो उन्हें आराम करने देंगे। अभी आते ही होंगे। अपने कपड़े लेने और चाय पीने। दोनों बच्चे (एक स्वर में) अरे वाह! तब तो हम जगे रहेंगे। पापा को गुडनाईट बोल कर ही सोएंगे।

चिंकी: पर मम्मा, सोएंगे अभी नहीं।

(फ़ोन की घंटी बजती है। नेहा फोन उठाती है) निखिल की आवाज़ः क्या करूँ कुछ समझ में नहीं आ रहा है। आज थोड़ी सर्दी खांसी और थकान सी लग रही है। और अभी छुट्टी भी नहीं ले सकता। बहुत देर हो गई तुम्हारे हाथ की चाय पिए। आ रहा हूँ। पर बच्चे सो जाएं तब। इतने इन्फेक्शन के बीच रहता हूँ कि कहीं............

नेहाः बस अब ज्यादा मत बोलो। आओ। खाना एक साथ खाएंगे। (गाड़ी के हार्न की आवाज़ आती है। नेहा दौड़कर दरवाजा खोलती है कि कहीं बच्चे जग न जाएं।)

निखिलः चाय पिलाओ। सर दुख रहा है। कोरोना का इलाज करते करते लगता है कि सारे लक्षण मुझमें ही समा गए हैं।

नेहाः प्लीज निखिल, लो चाय। अब तो यही कहोगे न कि दूरी बनाकर रखो। (हंसने लगती है।)

निखिलः मज़ाक नहीं कर रहा हूँ। इसीलिए तो बच्चों से भी नहीं मिल रहा हूँ।

नेहाः ओह हो निखिल। मत बोलो। मन घबरा जाता है।

निखिलः मुझे थोड़ी देर में जाना है। खाना लगाओ। जाते समय रूम की खिड़की खोल देना। बच्चों को देख लूंगा। मुझे पता है, मेरे इंतज़ार तरंगें, दीपक बुझने के आधे घंटे बाद तक वातावरण को पवित्र रखती हैं। पुराने जमाने में जब कोई मेहमान किसी के घर आता था। तो प्रवेश के समय उसकी आरती उतारी जाती थी। ताकि दूर दराज़ से उसव्यक्ति के साथ आने वाले सूक्ष्म कीटाणु एवं नकारात्मकता आरती से उत्पन्न सकारात्मक तरंगों में परिवर्तित हो जाएं। और आसपास की प्राण वायु सकारात्मकता से भर जाए जो कि स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।

रिंकी: अपने पास बड़ा वाला दीपक है न?

चिंकी: चल बनाते हैं। अच्छा मम्मा, जिनके पास दीपक नहीं हो तो?

नेहाः आटे का दीपक बनाकर सुखा लेंगे और उसे जला लेंगे। और एक तरीका यह भी है। कि नीबू निचोड़ कर रस निकाल लेने के बाद उलट कर तेल या घी भरकर जलाएंगे।

माँः निखिल तो नहीं आ पाएगा न?

नेहाः हां माँ। इनका काम अभी ज्यादा है। रात को शायद कपड़े लेने और चाय पीने आएंगे।

(पटाखों की आवाज़। बच्चों का शोर शराबा।)

चिंकी: मजा आ गया मम्मा। पापा रहते तो और मजा आता। पर पटाखे क्यों छूट रहे हैं? इससे प्रदूषण और बढ़ेगा न!

माँः हां। ये तो गलत है। आज से हम सभी रात में सोते समय एक एक कहानी सुनाएंगे।

रिंकीः पापा भी। और मम्मा भी।

नेहाः पापा आएंगे तो उन्हें आराम करने देंगे। अभी आते ही होंगे। अपने कपड़े लेने और चाय पीने। दोनों बच्चे (एक स्वर में) अरे वाह! तब तो हम जगे रहेंगे। पापा को गुडनाईट बोल कर ही सोएंगे।

चिंकीः पर मम्मा, सोएंगे अभी नहीं। (फ़ोन की घंटी बजती है। नेहा फोन उठाती है।)

निखिल की आवाज़ः क्या करूँ कुछ समझ में नहीं आ रहा है। आज थोड़ी सर्दी खांसी और थकान सी लग रही है। और अभी छुट्टी भी नहीं ले सकता। बहुत देर हो गई तुम्हारे हाथ की चाय पिए। आ रहा हूँ। पर बच्चे सो जाएं तब। इतने इन्फेक्शन के बीच रहता हूँ कि कहीं..........

नेहाः बस अब ज्यादा मत बोलो। आओ। खाना एक साथ खाएंगे। (गाड़ी के हार्न की आवाज़ आती है। नेहा दौड़कर दरवाजा खोलती है कि कहीं बच्चे जग न जाएं)

निखिलः चाय पिलाओ। सर दुख रहा है। कोरोना का इलाज करते करते लगता है। कि सारे लक्षण मुझमें ही समा गए हैं।

नेहाः प्लीज निखिल, लो चाय। अब तो यही कहोगे न कि दूरी बनाकर रखो। (हंसने लगती है।)

निखिलः मज़ाक नहीं कर रहा हूँ। इसीलिए तो बच्चों से भी नहीं मिल रहा हूँ। मन।

नेहाः ओह्हो निखिल। मत बोलो मन घबरा जाता है।

निखिलः मुझे थोड़ी देर में जाना है। खाना लगाओ। जाते समय रूम की खिड़की खोल देना। बच्चों को देख लूंगा। मुझे पता है, मेरे इंतज़ार में सो

नही रही होंगी। पर क्या करूँ ! मेरी भी मजबूरियाँ हैं। अभी अपनी भावनाओं को काबू में रखने का ही समय है। आज समाचार में देखा न ! भावनाओं में बह कर कैसे हजारों मजदूर एक साथ अपने अपने घरों को जाने के लिए इकट्ठा हो गये। कितना गलत है। बार बार कहा जा रहा है। कि यह जिन्दगी की पहली ऐसी रेस होगीं जिसमें रुकने वाला ही जीतेगा। ओके नेहा! लव यू ! टेक केयर।

[प्रकाश मद्धिम]

छठा दृश्य

[शाम का समय]

(टीवी चल रहा है। न्यूज़ आ रही है। माँ, नेहा, रिंकी, चिंकी सब एक साथ बैठे हैं।)

समाचारः अगले बीस घंटे भारत के लिए भारी। WHO ICMR ने कहा है। कि अगर बीस घंटे में भारतीय नहीं सुधरे तो भारत कल रात थर्ड स्टेज यानि कम्यूनिटी ट्रांसमिशन में चला जाएगा। तब भारत में 15 अप्रैल तक पचास हजार मौतें रोज हो सकती हैं। क्योंकि अन्य देशों के मुकाबले भारत की जनसंख्या बहुत अधिक है। परन्तु भारतीय इसकी गंभीरता को नहीं समझ रहे हैं। सभी देशवासियों से निवेदन है। कि इसे मस्ती मजाक नही समझें और सब मिलकर प्रार्थना करें कि भारत सेकेंड स्टेज में ही रहे।

माँः नेहा, ICMR क्या है?

नेहाः इन्डियन काउंसिल फॉर मेडिकल रिसर्च यानि भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद। इसका काम है रिसर्च को सत्यापित करना।

रिंकी: ये स्टेज क्या है?

नेहाः पहला स्टेज- जो लोग विदेश से लौट कर आए हैं, उनके द्वारा संक्रमण फैलता है।

दूसरा स्टेज- लोकल ट्रांसमिशन यानि एक से दूसरे में फैलता है। इसमें फैलाने वाले की पहचान की जा सकती है।

तीसरा स्टेज- इसमें जरा भी नहीं पता चलता कि कहाँ से शुरू हुआ। इसका कोई इतिहास नहीं मिलता है। फैलना शुरू हो जाए तो कन्ट्रोल करना मुश्किल हो जाता है।

चौथा स्टेज- अनियंत्रित होकर देश भर में फैल जाता है। जैसे चीन, इटली, स्पेन में हुआ। वहाँ सैकड़ों की तादाद में लोग मर रहे हैं।

माँः बच्चों, अब जाओ। आनलाइन क्लास शुरू होने वाला है। नेहा, तुमने सुना? आज प्रधानमंत्री ने एक नया एप्प डाउनलोड करने के लिए कहा है। जिसका नाम है "आरोग्य सेतु"।

नेहाः हाँ, माँ। कोरोना वाइरस जो एक अदृश्य शत्रु है, वह हमारे आस पास या घर में तो नहीं घुसा है? इसी का पता लगाएगा। इसके अनेक चरण होंगे जिनका हमें पालन करना है।

1. नमस्कार करें, हैंड शेक नहीं करें।
2. सामाजिक समारोहों से बचें।
3. लोगों से 6 फ़ीट की दूरी बनाए रखें।
4. छींकते खांसते समय मुंह पर रूमाल रखें।
5. हाथ और चेहरा बार बार साबुन से धोते रहें।
6. सेल्फ़ असेसमेंट टेस्ट रोज करें।
7. नियमित रूप से ऐप्प से जुड़े रहें।

माँः चेक कर लिया है? हम सभी ठीक हैं न। निखिल आएं तो उनका भी कर लेना। पर वो तो खुद ही डाक्टर हैं।

नेहा: जो हमारे कोरोना योद्धा हैं। जैसे पुलिस, डाक्टर, स्वास्थ्य कर्मी, सफ़ाई कर्मचारी उनको हमें दिल से धन्यवाद देना चाहिए जो इस मुसीबत की घड़ी में अपनी जान जोखिम में डाल कर महामारी के खिलाफ खड़े हैं। ईश्वर इन्हें लम्बी उम्र दें। वैसे इस संकट की घड़ी में भारत सरकार, राज्य सरकार, स्वयं सेवी संस्थाएं बढ़ चढ़ कर मदद कर रही हैं।

माँ: राशन घर घर पहुंचा रही है, भूखों को खाना खिला रही हैं, सब्जी, फल, दूध सब घर बैठे मिल जा रहा है। ताकि लोग सड़कों पर नहीं निकलें।

(रिंकी चिंकी का प्रवेश)

चिंकी: (गाते हुए) कोरोना जा जा जा।

रिंकी: (गाते हुए) कल रात की मेरी चिट्ठी पापा को दे आ।

चिंकी : (गाते हुए) कोरोना जा जा जा। चल, पापा को फ़ोन लगाते हैं। (फोन डायल करती है) पापा, तुम घर कब आओगे?

रिंकी: आओ ना, पापा, जल्दी।

(निखिल की आवाज़) हाँ, जरूर आएंगे। पढ़ाई हो रही है ना। थोड़ी देर नानी माँ के साथ लूडो खेल लेना। मम्मी को फ़ोन दो।

रिंकी: (नेहा को फ़ोन देते हुए) मम्मा, पापा का फ़ोन है।

नेहा: कैसे हो?

निखिल: माँ का ध्यान रखना, नेहा। कल मैने अपना कोरोना टेस्ट करवाया। रिपोर्ट निगेटिव है। चिंता की कोई बात नहीं है। पर कभी कभी मन घबरा जा रहा है। पता है? अपने शील नगर वाले चाचा जी हैं न। कल से सांस लेने में तकलीफ की वजह से आए थे। अब अस्पताल में भर्ती हैं। और शाम में चाची जी भी डायरिया की वजह से भर्ती हो गई हैं। दोनों की ही हालत गम्भीर है। अच्छा नेहा, टेक केयर।

(फ़ोन कट जाता है।)

माँ: क्या बात है, नेहा? बहुत चिंतित दीख रही हो !

नेहा: मन बहुत घबरा रहा है, माँ। निखिल की तबियत ठीक नहीं है।

माँ: अरे वो खुद ही डाक्टर है। अपना ध्यान रखेगा ही। चिंता की कोई बात नहीं है। मैं हूँ ना।

नेहा: पर माँ..........

रिंकी: नानी माँ, एक कहानी सुनाओ न। आज तो तुम्हारी बारी है।

माँ: चल सुनाती हूँ। एक शुतुरमुर्ग था। उसको ज़ोरों की भूख लगी और खाने की तलाश में निकल पड़ा। चलते भागते उसे अपनी परछाईं नज़र आई। उसने सोचा। कि आज का भोजन मेरे पीछे जो ऊंट आ रहा है, वही हो गया। खा लूंगा। भागता रहा भागता रहा और शाम होने को आ गयी। तब तक वो परछाईं छोटी हो गई, अब उसने सोचा कि इस चूहे को ही खा लिया जाए। नहीं तो वह भी नहीं मिलेगा। जैसे ही पलट कर देखा, तो चूहा गायब। उसे क्या पता कि उसकी परछाईं ही उसका पीछा कर रही है।

चिंकी: और इस तरह नानी, शुतुरमुर्ग भूखा ही रह गया। अब चलो सोने चला जाए।

(बच्चे सोने चले गए। नेहा निखिल का इंतज़ार कर रही है।)

(प्रकाश मद्धिम)

सातवां दृश्य

[माँ और नेहा बातें कर रहे हैं]

माँः नेहा, बच्चे अभी तक सो रहे हैं। लगता है कि रात में निखिल नहीं आए। काम काफ़ी बढ़ गया है।

नेहाः हाँ माँ। सभी डाक्टर, स्वास्थ्य और सफ़ाई कर्मचारी अपने अपने कामों में व्यस्त हैं। समय मिलते ही निखिल आएंगे नहाने, खाने और थोड़ा आराम करने। कल शील नगर वाले चाचा जी और चाची जी दोनों ही अस्पताल में एडमिट हो गये हैं।

माँः ओह !! दवा तो अभी आई नहीं है। आई०सी०यू० भी कम है। वेंटिलेटर का भी अभाव है। तुम्हारे चाचा चाची की तो उम्र भी काफ़ी है। बहुत ध्यान रखना होगा।

नेहा : हां। निखिल बता रहे थे। कि चाचा जी को अस्थमा भी है। वैसे पूरी टीम लगी हुई है।

माँः चाची को क्या हुआ है?

नेहाः उनका तो पेट ख़राब और उल्टी जब कन्ट्रोल नहीं हो पाया। तो लोग अस्पताल लेकर आए।

चिंकीः मम्मा, पापा आए क्या?

नेहाः अभी फ़ोन आया था। थोड़ी देर में आ जाएंगे।

(काल बेल की आवाज़)

रिंकी: मम्मा, पापा आ गए। (निखिल का प्रवेश)

निखिलः बच्चों, मुझसे दूर रहना। नहाकर, कपड़े बदल कर आता हूँ। फ़िर बातें करेंगे।

(सभी अपने अपने कामों में फिर व्यस्त हो जाते हैं।)

नेहाः (निखिल को चाय देते हुए।) चाचा चाची का क्या हाल है?

निखिलः पूछो मत। बहुत दुख हो रहा है। हम उन दोनों को बचा नहीं पाए। पहले चाचा जी चले गए फ़िर शाम होते होते चाची जी को हायर ऐंटीबायोटिक देने के बावजूद भी नहीं बचा पाए। अब समस्या ये हो गई कि इनकी बाडी को कौन ले जाए। दोनों बच्चे भी कोरोना पाज़ीटिव हैं। फ़िर भी बच्चे आए और श्मशान तक पहुंचा कर कि वापस हो गये।

माँः ओह! बहुत दुखद घटना हुई। ये तो सच है कि शरीर से प्राण निकलने के बाद घर का बिस्तर भी अपवित्र हो जाता है। जल्द से जल्द शरीर जो बाडी बन गाता है, भूमि पर उतार दिया जाता है। यहाँ तो कोरोना ही था।

नेहाः अभी तो दवा और वैक्सीन भी नहीं आई है।

निखिलः करीब करीब छे महीने तो लगेंगे ही। ये कितने गर्व की बात है। कि भारत में वैक्सीन बन रहा है, और वो भी छे अलग अलग लैबोरेटरी में। वैसे तो वैक्सीन का रिसर्च करने और लाने में कई साल लगते हैं। लेकिन भारत में काम बहुत तेजी से हो रहा है। सबसे पहले डाक्टर और फ्रंट लाइन वर्कर को ही वैक्सीन दिया जाएगा।

रिंकीः कल सुषमा, मेरी दोस्त, का फ़ोन आया था। उसके घर में सभी को कोरोना हो गया है। सब अलग अलग कमरे में बंद हैं।

चिंकीः और खाना पीना?

रिंकीः अगल बगल के लोग बाहर गेट पर खाना रख देते हैं। और घंटी बजाते हैं, तब वो लोग खाना लेकर अंदर जाते हैं।

नेहाः ऐसी भयावह बीमारी है कि लोग एक दूसरे की मदद भी नहीं कर पा रहे हैं।

रिंकीः नगर निगम वाले उनके घर को सील कर के चले गए हैं। न तो उनके घर में कोई बाहर से आएगा न ही कोई बाहर जाएगा।

चिंकी: हे भगवान, ये कोरोना हमलोगों के घर नहीं आए। नहीं तो हमलोग भी बंद।

निखिल: कितने घर तो ऐसे हैं जहाँ माँ बाप को कोरोना हो जा रहा है तो बच्चों को देखने वाला भी कोई नहीं है।

माँ: अब सरकार भी क्या करे। बार बार सभी लोगों से कह रही है कि सभी घर में रहें। मास्क लगाएं। पर नहीं।

निखिल: हां माँ, अस्पताल में तो बेड की मारामारी है। लोग बड़े बड़े लोगों से पैरवी करवा रहे हैं। बेड के लिए। पर हम लोग भी लाचार हैं। स्वास्थ्य विभाग के लोग जब दूर दराज़ गाँवों में जा रहे हैं तो लोग उनकी बात नहीं सुनना चाहते हैं। दवाएं, मास्क, सैनिटाइज़र वगैरह देते हैं तो लोग लेने से भी इंकार करते हैं।

नेहा: वैसे आज समाचार में था कि कोरोना की लहर कम हो रही है। लेकिन लोग सावधानी नहीं बरत रहे हैं। निखिल, विटामिन सी तो हमलोग रोज खाते हैं। गर्म पानी पी रहे हैं। और क्या करना चाहिए।

निखिल: इंडिया टीवी पर रोज सुबह बाबा रामदेव का प्रोग्राम आता है। सभी को देखना चाहिए। योग के माध्यम से हम अपने फेफड़े और शरीर को कैसे मजबूत रख सकते हैं। अनुलोम विलोम, भस्त्रिका, कपाल भाति आदि क्रियाओं से। जड़ी बूटी जैसे गिलोय, अश्वगंधा, शतावरी, तुलसी का सेवन करते रहना है। जब तक वैक्सीन नहीं आ रही है तब तक सभी तरह की पैथी पर भरोसा कर के चलना है।

रिंकी: मम्मा, क्या स्कूल खुल जाएगा?

नेहा: नहीं, अभी आनलाइन क्लास ही चलेंगे।

चिंकी: चलो, हमलोग कहीं घूमने चलते हैं। पापा, क्या विचार है?

निखिलः नहीं बेटा, सब यही गलती कर रहे हैं। पर हमें नहीं करना है। कोरोना अभी खत्म नही हुआ है।

(प्रकाश मद्धिम)

आठवाँ दृश्य

[कुछ समय बाद सभी ड्राइंग रूम में बैठे हैं।]

निखिलः अगले महीने से कोरोना वैक्सीन आ रही है। हम सभी को अपने अपने मोबाइल फोन में आरोग्य सेतु ऐप डाउनलोड कर के कोविन से रजिस्ट्रेशन कर लेना है। नेहा, तुम अपना और माँ का कर लेना।

चिंकी: और हम दोनों का?

निखिलः अभी बच्चों की वैक्सीन नहीं आई है। बड़ों की वैक्सीन के दो डोज़ हैं। वैक्सीन की पहली डोज़ के एक महीने के बाद दूसरी डोज़ दी जाएगी। सरकारी अस्पतालों में यह मुफ्त है। प्राइवेट अस्पतालों में कुछ पैसे लगेंगे। दो कम्पनी भारत में वैक्सीन बना रही हैं। पहला कोवैक्सीन, जो भारत बायोटेक कम्पनी बना रही है। दूसरा कोविशील्ड, जो सीरम इंस्टीट्यूट बना रही है।

चिंकी: पापा, ये तो भारत के लोग ले लेंगे, पर विदेशों में, जहाँ कोरोना है, वहाँ लोग कैसे लेंगे?

निखिलः भारत में जैसे दिया जा रहा है, वैसे ही विदेशों में भी है। मगर वहाँ मुफ़्त नहीं है। भारत भी अपनी जरूरतें पूरी हो जाने पर विश्व के अनेक देशों में वैक्सीन भेज रहा है।

नेहाः कोरोना लहर थोड़ी ठहरी है, निखिल। चलो गाड़ी में ही सही, बच्चों और माँ को थोड़ा घुमा लाएं।

निखिल : पर सभी मास्क लगाकर जाएंगे। सैनिटाइज़ करते रहेंगे। और आइसक्रीम तो बिलकुल ही नहीं खाएंगे। आओ गुलज़ार की कुछ पंक्तियाँ सुनाते हैं:-

बेवजह घर से निकलने की ज़रूरत क्या है

मौत से आंखें मिलाने की ज़रूरत क्या है

सबको मालूम है, बाहर की हवा है क़ातिल

यूँ ही क़ातिल से उलझनें की ज़रूरत क्या है

ज़िन्दगी एक नेमत है उसे संभाल के रखो

कब्रगाहों को सजाने की ज़रूरत क्या है

दिल बहलाने के लिए घर में वजह है काफ़ी

यूँ ही गलियों में भटकने की ज़रूरत क्या है।

नेहाः वाह वाह क्या बात है। ब्रूस ली ने सही कहा है कि " दर्द आपको सिखाने आता है, जब आप सीख जाते हैं, तो आपको छोड़ देता है।

निखिलः वाह, नहले पे दहला।

रिंकी: अभी तक आप दोनों बातें ही कर रहे हैं। हम सब घूमने कब जाएंगे?

नेहाः चलते हैं। पर सावधान रहना।

चिंकीः सावधानी हटी, दुर्घटना घटी।

माँः गाड़ी में पानी और कुछ खाने पीने का रख लो। नहीं तो रिंकी चिंकी को गाड़ी में बैठते ही बहुत ज़ोरों की भूख लग जाएगी।

(सभी हंसने लगते हैं)

(प्रकाश मद्धिम)

नवां दृश्य

[सुबह का समय]

नेहा: आज अस्पताल में तुम्हारी ड्यूटी क्या है?

निखिल: अरे तुमको याद नहीं है? आज की तारीख है 16 जनवरी। आज से फ्रंट लाइन वर्कर्स को कोरोना वैक्सीन देने की शुरुआत हो रही है। सबसे पहली वैक्सीन मुझे ही लगेगी।

नेहा: तब तो आज रेस्ट डे है न। अगर दर्द होगा या रिएक्शन हुआ तो?

निखिल: आज ही पता चलेगा कि क्या होगा।

माँ: अपना ख्याल रखना, बेटा। ज्यादा भाग दौड़ मत करना।

निखिल: हाँ माँ, आप चिंता न करें। सब ठीक होगा। चलता हूँ।

(निखिल निकल जाता है।)

चिंकी: आज पहले स्टोरी टेलिंग उसके बाद क्लास।

रिंकी: सबसे पहले नानी माँ।

माँ: तुम लोग हमेशा मुझे ही क्यों चुनती हो? अच्छा चलो। एक संस्मरण सुनाती हूँ। एक बार मैं तिरुपति के बालाजी मंदिर में गई थी। दर्शन के लिए बहुत लम्बी लाइन थी। मैं भी लाइन में लग गई। तब तक एक बच्चा ज़मीन पर पैरों से घिसटते घिसटते आया। पैसा और खाने को मांगने लगा। दयावश मैंने पैसे दे दिए। लाइन में जितने लोग थे, सभी पैसे दे रहे थे। लाइन जब आगे बढ़ी तब मैंने देखा कि वही बच्चा खड़ा होकर पैसे गिन रहा था। और दूसरा बच्चा उसी की तरह पैरों को घसीट घसीट कर भीख

मांगने लगा। मुझे बहुत बुरा लगा। मंदिर, जो एक आस्था और विश्वास की जगह है, वहाँ ऐसा अनर्थ करते हैं लोग?

चिंकी: ये तो बिलकुल गलत बात है। लोग कैसे विश्वास करेंगे। कि वो सच में अपाहिज है कि नहीं।

नेहाः अब तुम लोगों की स्टोरी टेलिंग क्लास खत्म हो गई। हो तो होमवर्क शुरू करें?

(काल बेल की आवाज़)

(निखिल का प्रवेश)

निखिलः लो, मैं वैक्सीन लेकर आ गया।

नेहाः कैसा लग रहा है। कुछ हुआ क्या?

निखिलः कुछ भी नहीं। फ़िर भी वैक्सीन देने के बाद आधे घंटे के लिए रोका जा रहा है। देखने के लिए कि कोई रिएक्शन तो नहीं हुआ। अगर रिएक्शन होता है। तो डाक्टर की टीम रहती है। मैनेज करने के लिए। अभी कोरोना फिर से काफ़ी बढ़ने लगा है। बहुत सावधानी से रहना है सबको।

माँः हमलोग तो सब्जी भी लेते हैं। तो पहले अच्छी तरह से धो लेते हैं। बाज़ार से जो भी सामान आता है, सब सैनिटाइज़ करते हैं।

निखिलः बहुत सही है, माँ।

नेहाः चाय पियोगे या खाना ही लगाऊँ।

चिंकीः उफ्फ्फ, बोरिंग। फ़िर चाय? चलो खाना ही खाते हैं। आज टीवी पर कार्टून फ़िल्म देखेंगे।

निखिलः ओके। चलो।

(प्रकाश मद्धिम)

दसवाँ दृश्य

[बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। नेहा और माँ सब्जी काटते हुए बातें कर रहे हैं। अंदर से निखिल का प्रवेश]

निखिलः गला दर्द से बहुत परेशान है। थोड़ा बुखार भी लग रहा है। आज अस्पताल जाकर कोरोना टेस्ट कराऊंगा। इतने मरीजों के बीच रहता हूँ कि भय बना रहता है। अदरक वाली चाय पिलाओ।

माँ: पहले गर्म पानी का भाप ले लो। फिर चाय, तब अनुलोम विलोम कर लो।

चिंकीः चल आ, रिंकी। पापा को हमलोग अनुलोम विलोम कर के दिखाएं।

निखिलः अच्छा मुझसे थोड़ी दूर ही रहो। क्या पता......

नेहाः लो, चाय पियो और शुभ शुभ बोलो। आज आनलाइन मुझे बहुत पेमेंट करना है। बिजली बिल, बच्चों की फ़ीस, दूध का हिसाब वगैरह वगैरह।

रिंकी: पर हमलोग स्कूल तो जाते ही नहीं, फिर फ़ीस कैसी?

नेहाः अरे आनलाइन क्लास करती हो। टीचर पढ़ाती हैं। उन्हें वेतन तो दिया जाएगा। फ़िर चपरासी, दाई.... सबको पैसे की ज़रूरत है। वो सब कहाँ से दिया जाएगा। फ़ीस के माध्यम से ही दिया जाएगा न?

चिंकी: समझ गई मेरी बहना

(दोनों एक दूसरे को मुंह चिढ़ाते हुए अंदर चली जाती हैं)

माँः निखिल, कुछ दिनों के लिए छुट्टी क्यों नहीं ले लेते हो? जब तबियत ठीक हो जाए तो फ़िर चले जाना।

निखिलः आपका सुझाव अपनी जगह एकदम सही है। पर हमारा भी तो कर्तव्य है। कि मरीजों का ध्यान रखें। और सोच रहा हूँ कि आज कोरोना टेस्ट करवा ही लूं। थोड़ी तसल्ली हो जाएगी। घर में बच्चे हैं, आप हैं, नेहा है। अगर मुझसे इंफेक्शन लग गया तो अनर्थ हो जाएगा।

नेहाः अब बस भी करो। लंच बना कर दे दूं या लंच करने आओगे?

निखिलः लंच और डिनर दोनों दे देना। देखता हूँ, वहाँ की स्थिति क्या है। अच्छा, जल्दी करो। अस्पताल से चार बार फ़ोन आ चुका है। लगता है। कि कोई इमरजेंसी है। मैं तैयार हो कर आता हूँ।

माँः डाक्टर अपने काम के प्रति कितने समर्पित होते हैं। अब निखिल को ही देखो। ड्यूटी करना है। तो करना है। बहुत गर्व होता है। डाक्टरों पर और खासकर निखिल पर।

निखिलः नेहा नाश्ता कराओ और फूड पैकेट बढ़ाओ। मै चला।

नेहाः आ रही हूँ।

निखिलः अच्छा सबलोग अपना अपना ख्याल रखना। रिंकी चिंकी, नानी माँ का विशेष प्रकार से ध्यान रखना।

(निखिल फूड पैकेट लेते हुए निकल जाते हैं। सभी अपने अपने काम में व्यस्त हो जाते हैं।)

चिंकी: रिंकी, बाहर देख। कुत्ते के पिल्ले कैसे रो रहे हैं। मम्मा से दूध और रोटी ले कर आओ। इन्हें देने के लिए।

रिंकी: लोग कितने निर्दयी होते हैं। ये बच्चे, बेचारे ठीक से चल भी नहीं पाते हैं। एक अंकल अपनी बाइक से उसे टच कर के चले गए, एक पिल्ला तो लगता है कि मर भी गया।

चिंकी: तभी देख, उसकी मम्मी कैसे सभी गाड़ियों के पीछे दौड़ रही है। उसे लगता है कि इसी बाइक या गाड़ी ने मेरे बच्चे को मारा है,

नेहा : (अंदर से आती है) लो, रोटी तो नहीं है। दूध और बिस्किट दे दो। सब खा लेंगे और आराम से सो जाएंगे। और तुम लोग भी अंदर आओ। अपना अपना काम करो।

रिंकी: मम्मा, आज स्टोरी टेलिंग क्लास में आप कहानी सुनाओगी न।

नेहाः हाँ, चलो, सुनाती हूँ।

(शाम का समय)

(फ़ोन की घंटी बजती है)

निखिल की आवाज़: नेहा, कैसे हो, तुम सब? बच्चे ठीक है ना। मैंने अपना कोरोना टेस्ट करवा लिया है। रिपोर्ट आने में कुछ घंटे लगेंगे। मैंने दवा तो ली है। पर अभीतक आराम नहीं है। पर काम तो करना ही है ना। खाना खा लिए हैं।

नेहाः सब ठीक है। रिपोर्ट आए तो बताना। दोनों दुष्ट अभी अभी सोई हैं। आज कहानी सुनाने का टर्न मेरा था। माँ भी ठीक है।

(प्रकाश मद्धिम)

ग्यारहवाँ दृश्य

[चिड़ियों की चहचहाहट के साथ सुबह का समय]

नेहाः (स्वगत) निखिल से बात कर लूँ कि कैसे हैं। (कॉल लगाती है)

निखिल (फ़ोन पर) हाँ, नेहा। मैं तुम्हें फ़ोन करने ही वाला था ये बताने के लिए कि मेरी कोरोना रिपोर्ट पाज़ीटिव आई है। अभी मैं घर नहीं आऊंगा।

अस्पताल में ही एडमिट हो जा रहा हूँ। कोई भी इमरजेंसी होगी तो यहाँ मैनेज हो जाएगा। दस दिन तो लगेंगे ही। बच्चे और तुम सब को बचाना भी तो है।

नेहाः (उदास मन से) निखिल, तुमने तो वैक्सीन ली थी। फ़िर कैसे पाज़ीटिव हो गया। मन बहुत भयभीत हो रहा है। मैं तो बिलकुल निश्चिन्त थी कि तुमने वैक्सीन ली ही है, तुम्हें कोरोना कैसे होगा।

निखिलः हो सकता है कि वैक्सीन लेने के समय मुझे सब क्लीनिकल इंफेक्शन रहा होगा। वही फैल गया होगा। इससे रिपोर्ट पाज़ीटिव आई होगी।

नेहाः तुम सही सोच सकते हो। पर अपना ध्यान रखना। ज़िन्दगी में ऐसी भी लाचारी आएगी, कभी सोचा ही नहीं था। (रोते हुए फ़ोन रख देती है)

माँः नेहा, निखिल का फ़ोन था क्या? कैसा है? क्या कहा उसने? तुमः रो क्यों रही हो?

नेहाः (माँ से लिपट कर फूट फूट कर रोने लगती है) माँ, निखिल को कोरोना हो गया है। इंफेक्शन फैलने के डर से दस दिनों के लिए वो अस्पताल में ही रहेंगे।

माँः नेहा शांत हो जाओ। निखिल को कुछ भी नहीं होगा। हम सब प्रार्थना करेंगे कि निखिल जल्दी ठीक होकर घर आ जाएं।

चिंकीः क्या हुआ, नानी माँ? पापा को कोरोना हो गया है क्या? हम सभी की इम्म्यूनिटी तो बहुत स्ट्रांग है। फ़िर कैसे?

माँः होता है बेटा। अब चलो सभी अपने अपने दैनिक काम में जुटो।

रिंकी: नहीं नानी माँ। आज हम सब पापा के अच्छे होने के लिए प्रार्थना करेंगे।

चिंकी: रिंकी के साथ मैं भी नानी माँ।

माँ: आज मम्मा को ज्यादा तंग नहीं करना। चलो हम सब मिलकर घर काम काज करें बड़ी उदास है आज।

चिंकी: ठीक है नानी माँ। आप हमलोगों को गाइड करें। हमलोग करते जाएंगे।

रिंकी: हाँ, पहले मम्मा को चाय देकर आती हूँ। फ़िर खाना बनाने में हेल्प करूंगी।

चिंकी: शाम में पापा से बात करेंगे। उनका हाल लेंगे। अभी तो सो रहे होंगे।

नेहा: मुझसे ज्यादा तो तुमलोग परेशान हो। क्लास का समय हो गया है। अपने अपने क्लास में जाओ। माँ, आपने काढ़ा लिया क्या? अभी बनाती हूँ। सबलोग पिएंगे। फ़िर खाना बनाते हैं।

रिंकी: होमवर्क हो गया। क्लास भी खत्म। चिंकी आओ, पापा से बात करते हैं।

चिंकी: (निखिल को फ़ोन लगाती है) पापा आप कैसे हैं? हम सभी ने प्रार्थना की है कि आप जल्दी ठीक हो जाएं। पापा, मेरी आवाज़ आ रही है?

निखिल की आवाज़: हाँ बेटा। बोल नही पा रहा हूँ। मम्मा को फ़ोन दो।

चिंकी: मम्मा, पापा बात करेंगे।

नेहा: हाँ, बोलो। खाना खाया या नहीं?

निखिल की आवाज़: सांस लेने में बहुत तकलीफ हो रही है।

आक्सीजन लेवल घटता ही जा रहा है। तबियत नहीं संभली तो

आई०सी०यू० में शिफ्ट होना पड़ेगा। पर, घबराना नहीं।

आई०सी०यू० मे जाने से पहले बच्चों से मिलना चाहता हूं। रात

किसी समय आऊंगा। बच्चों के कमरे की खिड़की खोल कर रखना।

नेहाः घबराओ नहीं, निखिल। सब ठीक हो जाएगा। तुम तो फ़ाइटर हो, मेरे हीरो।

निखिल की आवाज़ः फ़ोन रखता हूं। बोला नहीं जा रहा है।

(बेचैन नेहा ड्राइंग रूम में सोती जागती बैठती उठती रहती है। रात होने का इंतजार कर रही है। टीवी की आवाज़ धीमी रखती है। कभी मां बच्चों को देख कर आती है।)

नेहा (स्वयं से) : बाहर देखकर आती हूँ। कोई गाड़ी तो नहीं आई। निखिल आकर चले तो नहीं गए। हे भगवान, क्या करूँ। निखिल को फ़ोन लगाऊँ क्या! पर अगर सो रहे होंगे तो उनकी नींद खराब हो जाएगी। क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आ रहा है। कहीं नींद न आ जाए।

(नेहा जमीन पर बैठकर सेन्ट्रल टेबल पर सर रखकर लेटी रहती है। अचानक नींद खुलती है और दौड़ कर बाहर जाती है।)

नेहा (स्वयं से) : गाड़ी चली गई? निखिल, रुको। मुझे देख लो। मैं तुमसे मिलना चाहती हूँ, हाथ मिलाना चाहती हूँ। निखिल।। तुम कहोगे, हाथ नहीं मिलाना। पर, निखिल.......... ये तो ग़लत बात है। आए भी और मिले भी नहीं। फ़ोन करती हूँ। स्विच आफ़? क्यों? हे भगवान, रक्षा करना। (फ़ोन की घंटी बजती है) हाँ निखिल, बोलो। कैसी तबियत है?

फ़ोन पर किसी की आवाज़ः बहुत दुख हो रहा है। हम सब सर को बचा नहीं पाए।

नेहा (रोते हुए) : निखिल, एकबार हाथ तो मिलाया होता।

(प्रकाश मद्धिम)

नाथ सम्प्रदाय

पात्र	
नट	
नटी	
गोरखनाथ	
मच्छेन्दर नाथ	
साधु संख्या	6
महिला पात्र	6
महात्मा	2
शिष्य	4
योगी	1
पत्रकारिता	4

(मंच पर साधुओं की टोली गाते-बजाते रंग गुलाल उड़ाते जा रही है)

आदि आदिनाथ शिवं एवं मीननाथ

अनिश्चयिलिताभ दीपकालिका स्वधार बन्धदिभियो

योगी युगकल्प कालना तत्वां च यो गीतये

नटः तुम्हें पता है यह टोली किसकी है?

नटीः मेरा मार्गदर्शन करो।

नटः नाथ संप्रदाय की टोली है जिसमें ना का अर्थ है। स्वामी, अनादिरूप और थ का अर्थ है। स्थापित होना। इस प्रकार नाथ का अर्थ हुआ। अनादि धर्म, जिसके आदि गुरु हैं- आदिनाथ।

नटीः नाथ सम्प्रदाय के संस्थापक कौन हैं?

नटः शिव को नाथ सम्प्रदाय का प्रथम गुरु माना जाता है। भारत के हिंदू धार्मिक पंथ के हैं। जिनमें मध्य युग के समय से ही बौद्ध, शैव और योग की परम्परा दिखाई पड़ती है। इस सम्प्रदाय के अनेक गुरु हैं, जिनमें प्रमुख हैं। मछेन्द्रनाथ तथा गुरु गोरखनाथ। यह सम्प्रदाय पूरे विश्व में फैला हुआ। है। शिव पुराण के अनुसार गोरखनाथ को शिव का अवतार माना जाता है।

नटी : भारत में नाथ सम्प्रदाय को सन्यासी, योगी, जोगी, नाथ, अवधूत, कौल, उपाध्याय, आदि नामों से जाना जाता है! इनके कुछ गुरुओं के शिष्य मुसलमान, जैन, सिख, और बौद्ध धर्म के भी थे।

नाथ कहै तुम आपा राखौ

नाथ कहै तुम सुनहू रे अवधू

नटी : कनफटा, दर्शनी और गोरखनाथ के नाम से भी इनका परिचय दिया जाता है क्या?

नटः कान की लौ चिरवाने के कारण इन्हें कनफटा कहा जाता है, दीक्षा के समय कान फाड़ने की क्रिया की जाती है।

नटी: और गोरखनाथी?

नटः- गोरखनाथी नामकरण सम्प्रदाय के प्रवर्तक या संगठन कर्ता के कारण ही हुआ है।

नटी:- इनका परिधान और जीवन शैली क्या है?

नट:- कर्ण भेदन संस्कार की अत्यन्त कठिन प्रक्रिया होती है। इसमें कान फाड़ कर चीरा लगाया जाता है। और उसमें नीम की लकड़ी ठूंस दी जाती है। फिर उसमें मिट्टी के भारी कुंडल पहनाए जाते हैं।

नटी :-तब तो बहुत दर्द होता होगा ?

नट :- हां। कर्णभेदन करवाने वाले को नया नाथ कहा जाता है। और नया नाथ को चालीस दिन तक लेटकर लम्बा सोना वर्जित है। उन्हें बैठकर ही सोना पड़ता है। और इक्कीस दिनों तक उन्हें बद कमरे में ही रखा जाता है।

नटी :-ऐसा क्यों?

नट:-ताकि इस दौरान अकेला रहना सीख ले। इक्कीस दिनों तक उन्हें काबा और पतला हलवा दिया जाता है। नियमित भोजन नहीं दिया जाता है। और गंगाजल पिलाया जाता है। तीन महीने तक नमक भी नहीं दिया जाता है। बंद कमरे में इसलिए रखा जाता है। ताकि वह इस संसार की असारता को समझ जाए।

नटी :-जिसने अद्वैत को सीख लिया वह सिद्ध है। एकाएकी सिध नाऊ लोई स्माति ते साधना चारि पंच कुटुम्ब नाऊ दस बीस ते लस्कारा

नट:- ऐसे संन्यासी उत्तर, दक्षिण, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट, पंजाब, गंगा के आसपास के प्रदेशों में और नेपाल में मिलते है। वहां गोरक्ष नाथ को आदिगुरू और कनफटा सम्प्रदाय कहते है।

नटी :-और गोरखनाथी किसे कहते है?

नटः- नाथ साधु संत परिव्राजक होते हैं। वह भगवा रंग के बिना सिले वस्त्र धारण करते हैं। गले में काला ऊन का एक जनेऊ रखते हैं। जिसे सिले कहते हैं। साथ ही गले एक सींग की नादी रखते हैं। इन दोनों को सिंगीसेली कहते हैं।

एक हाथ में चिमटा और दूसरे में कमंडल रखते हैं। नाथपंथी भजन गाते हुए घूमते हैं। और भिक्षाटन कर जीवन यापन करते हैं। उम्र के अंतिम चरण में वह किसी एक स्थान पर रुक कर अखंड धूनी रमाते हैं। कुछ नाथ साधक हिमालय की गुफ़ाओं में चले जाते हैं। और वहीं समाधि ले लेते हैं।

नटीः- नाथ गुरु कौन कौन हैं?

नटः- आठवीं सदी में चौरासी सिद्धों के साथ बौद्ध धर्म के वज्र यान की परम्परा थी। जो सभी नाथ थे। और इनकी संख्या 9 थी। सिद्ध धर्म की वज्र यान शाखा के अनुयायी सिद्ध कहलाते हैं। उनमें से प्रमुख जो हुए, उनकी संख्या चौरासी।

नटीः- 9 नाथ कौन कौन हैं?

नटः- 1। मछेन्द्रनाथ

2। गोरखनाथ

3। जालंधर नाथ

4। नागेश नाथ

5। भर्तृ नाथ

6। चर्पटी नाथ

7। कानिफ नाथ

8। गहनी नाथ

9। रेवन नाथ

नटीः-मुझे मछेन्द्रनाथ के विषय में जानना है।

नटः- नाथ सम्प्रदाय में आदिनाथ और दत्तात्रेय के बाद सबसे महत्वपूर्ण नाम आचार्य मछेन्द्रनाथ का है, जिनको मीननाथ भी कहते हैं। इन्होंने हठयोग विद्यालय की स्थापना की है। इनके शिष्य थे गोरखनाथ।

नटीः-गुरु मछेन्द्रनाथ का जन्म कहाँ हुआ था?

नटः- गुरु मछेन्द्रनाथ का जन्म मछली के पेट से हुआ था। पेट में बैठे बैठे सारे उपदेश सुन रहे थे। आठवीं और नवीं सदी के योगसिद्ध तंत्र परम्पराओं में प्रमुख थे।

नटीः- जब गोरखनाथ को शिष्य माना जाता है, तो इनका जन्म कैसे हुआ?

नटः- इनकी कथा बहुत रोचक है। सुनो-

प्रथम दृश्य

(स्त्री पुरुष वार्तालाप)

पुरुषः ईश्वर ने हमें सबकुछ दिया, पर संतान विहीन कर दिया। जाने कब वो दिन आएगा जब हम दोनों के घर नन्हे बच्चे की किलकारी गूंजेगी और हम माँ बाप कहे जाएंगे।

स्त्रीः हे ईश्वर, हमने ऐसा क्या पाप किया है, जो इतनी बड़ी सज़ा दे रहे हैं। सारे पापों का प्रायश्चित करने को हम तैयार हैं प्रभु, मेरी गोद भर दो।

(भिक्षा के लिए याचना करते हुए साधुओं की टोली द्वार तक आती है।)

समवेत स्वरः ॐ नमः शिवाय,

ॐ नमः शिवाय

प्रथम साधुः अलख निरंजन - भिक्षा दे दो माई

पुरुषः बाबा, हमारे पास जो रूखा सूखा है, आपके चरणों में अर्पित करते हैं।

स्त्रीः (चावल देते हुए) महाराज, आप तो सिद्ध पुरुष लगते हैं। मेरे कष्ट का निवारण करें।

प्रथम साधुः क्या कष्ट है, पुत्री? तुम इतनी उदास क्यों दीख रही हो?

स्त्रीः हम दोनों संतान विहीन हैं। लोग ताने मारते रहते हैं। कृपया कुछ करें।

एक भिक्षुः अरे बहन, तुम्हें नहीं पता, तुम्हारे घर कौन आया है।

स्त्रीः नहीं महाराज।

दूसरा भिक्षुः प्रथम मानव गुरु मछेन्द्रनाथ, जो मछली के पेट में बैठे बैठे सारे उपदेश सुन रहे थे। और बाद में शिव जी द्वारा अनुगृहीत और उद्धृत होकर महासिद्ध हुए। भोलेनाथ ने इन्हें वरदान दिया और कहा - तुम्हें नाथपंथ के लिए बहुत काम करना। तुम नगरी नगरी घूम कर धर्म का प्रचार करो और नाथपंथ को आगे बढ़ाओ।

तीसरा भिक्षुः और भोलेनाथ ने कहा- तुम्हारे द्वारा दी गई भस्मी से ही उनके अंश गोरखनाथ का जन्म होगा।

स्त्रीः तब तो प्रभु मेरी इच्छा अवश्य पूरी करेंगे।

गुरु मछेन्द्रनाथः (संजीवनी बूटी देते हुए) पुत्री, मैं तुम्हारे दुख को समझ रहा हूँ। यह लो, इसे रजस्वला के बाद खा लेना। तुम्हारी मनोकामना अवश्य पूरी होगी। मैं बारह वर्षों बाद उस बालक से मिलने आऊंगा। अलख निरंजन।

(साधुओं की टोली का प्रस्थान)

स्त्रीः (मुख पर प्रसन्नता की लहर लिए हुए पुनः अपने कार्य में व्यस्त हो जाती है) हे, प्रभु, मेरी मनोकामना अवश्य पूरी करना।

दूसरी स्त्रीः क्या बात है, बहुत प्रसन्न दीख रही हो।।

स्त्रीः हाँ, बात ही ऐसी है। आज भिक्षा के लिए साधुओं की एक टोली आई थी। मैंने बाबा से अपना दुख बताया और उन्होंने मुझे संजीवनी बूटी दी और कहा मैं बारह वर्षों बाद आऊंगा। फिर वो चले गए।

दूसरी स्त्री: अरे बहन, इसमें नहीं पड़ना। आजकल साधु के वेष में अनेक ठग घूम रहे हैं। तुम इसे खाकर अपना सुधबुध खो बैठोगी और वह..........

स्त्री: ठीक कह रही हो। फिर मैं इसे नहीं खाती हूँ।

दूसरी स्त्री: चलो, इसे कूड़ा के ढेर में, गाँव से दूर, नदी किनारे गाड़ आते हैं। वहाँ से इसे कोई नहीं ले पाएगा।

स्त्री: चलो बहन। अगर तुम नहीं आती, तो मैं तो ठगी ही जाती। (दोनों गोबर के कूड़े के ढेर में गाड़ देती हैं) पर, मेरा दुख तो ज्यों का त्यों ही रह गया।

(कुछ समय पश्चात, पुनः साधुओं की टोली भिक्षा मांगने उस स्त्री के द्वार पर आते है)

गुरु मछेन्द्रनाथ: ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय। भिक्षा दे दो माई।

प्रथम साधुः अलख निरंजन। माई, भिक्षा दे दो। हम वही ब्राह्मण हैं। जो बारह वर्ष पूर्व तुम्हारे घर आए थे। हम सब उस बालक से मिलना चाहते हैं।

गुरु मछेन्द्रनाथ: पुत्री, वह बालक शिव का अवतार है। जो हाड़ मांस के साथ मनुष्य रूप में संसार में आया है। और अपनी साधना तथा सिद्धि से यश प्राप्त करेगा। वह शिव का अवतारी होगा।

स्त्री: पर बाबा, मैंने तो लोगों के बहकावे में आकर आपके द्वारा दी हुई। संजीवनी बूटी को गोबर के ढेर में छुपा दिया था।

गुरु मछेन्द्रनाथ: मूर्ख बालिके। यह तुमने क्या किया? चलो, मुझे उस स्थान पर ले चलो। (ढेर पर पहुँच कर आवाज़ देते हैं, अलख निरंजन। तभी उन्हें एक गाय दीखती है। जो गड्ढे के ऊपर खड़ी हो कर अपना दूध गड्ढे में छलका रही है। गुरु को विश्वास हो जाता है। कि वो बच्चा यहीं है)

गुरु मछेन्द्रनाथ: हे योगविद्या से उत्पन्न होने वाले बच्चे, अगर तुमने जन्म ले लिया है, तो मुझे आवाज़ लगाओ।

बच्चा (सुर में) गुरु जी मुझे बाहर निकालो। मुझे यहाँ रहते हुए बारह वर्ष हो गए।

साधु: (समवेत स्वर) ऊँ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय। बाहर आओ, बच्चे।

बच्चा: मैं कौन हूँ, बाबा? आपके चरणों में प्रणाम निवेदित करता हूँ।

गुरु मछेन्द्रनाथ: बच्चा, तुम शिव के अवतार हो। तुम्हारा नाम शिव अवतारी गोरखनाथ है। और तुम्हें आगे चलकर नाथपंथ को आगे बढ़ाना है।

बच्चा: जी, गुरु जी। मुझे अपनी शरण में ले लीजिए।

स्त्री: बेटा, मुझे छोड़ कर मत जाओ। मैं तुम्हारी माँ हूँ।

बच्चा: गुरु जी, हमें मोहमाया से दूर चलना होगा।

(प्रस्थान)

(साधुओं की मंडली है। गोरखनाथ वहीं बैठे हैं।)

बच्चा: गुरुदेव, यह संसार क्या है?

गुरु मछेन्द्रनाथ: यह संसार परमात्मा की एक रचना है। जिसे मृत्यु लोक कहा जाता है। जो जीव इस संसार में मैथुनी विधि से जन्म लेता है उसकी मृत्यु होती है। पर कुछ जीव ऐसे हैं जो ईश्वर के अंश हैं या उनकी ज्योति से जुड़े हैं। वो कभी मरते नहीं हैं।

बच्चा: गुरुदेव, यह सुख दुःख, दिन रात, अमीरी गरीबी क्या है?

गुरु मछेन्द्रनाथ: संतुलन बनाए रखने के लिए भगवान ने इन्हें बनाया है। दिन रात नहीं होगा तो ये सृष्टि खतरे में पड़ जाएगी।

बच्चा: भगवान क्या है और कहाँ है?

गुरु मछेन्द्रनाथ: भ – से - भूमि यानि सारा जगत। ग- से- गगन यानि आकाश। वा-से- वायु जिससे जीवन श्वास लेता है।न- से-नीर जिसे प्राणी पीकर जीवित रहते हैं यानि भगवान इन चारों तत्वों का मेल है।

बच्चा: चारों तत्वों को वश में कैसे किया जाता है?

गुरु मछेन्द्रनाथ: योग द्वारा मन को ध्यान में लगाओ तभी मन वश में किया जा सकता है। बेटा, अब तुम ध्यान लगाओ। हमें भिक्षाटन को जाने दो।

बच्चा : गुरु दक्षिणा में मुझे क्या देना है, बाबा?

गुरु मछेन्द्रनाथः बच्चा, तुम्हारे द्वारा की गई सेवा ही मेरी गुरु दक्षिणा होगी।

(अलख निरंजन, अलख निरंजन बोलते हुए बाबा की टोली निकल जाती है। बच्चा ध्यान में लीन हो जाता है।)

(एक प्रहर बीतने के बाद बाबा वापस आते हैं)

गुरु मछेन्द्रनाथः बेटा, बहुत जोरों की भूख लगी है। कुछ भिक्षा लेकर आओ। भोजन कर लूं। पर याद रहे, नाथ कभी एक घर से भिक्षा नहीं लेता है। अनेकों घरों से लेता है। यह लो चिमटा और भिक्षा पात्र। और जाओ।

बच्चाः ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय (प्रस्थान) (दूसरे प्रहर में बच्चे का प्रवेश)

बच्चाः पूरा कमंडल भर कर भिक्षा लाया हूँ।

गुरु मछेन्द्रनाथ : गोरखनाथ, आप भी भोजन ले लो। दही बड़े बहुत स्वादिष्ट हैं। थोड़ा और मिल सकता है क्या?

बच्चाः मैं और दही बड़े लेकर आता हूँ ।

(पुनः उसी द्वार पर आकर) माई, भिक्षा दे दो।

स्त्रीः तुम तो अभी भिक्षा लेकर गये थे। फिर आ गए? ढोंगी कहीं का। झूठा कहीं का।

बच्चाः मैं नाथपंथ का योगी हूँ। कभी झूठ नहीं बोलता। मेरे गुरु जी को दही बड़े बहुत पसंद आए हैं। उनके लिए लेने आया हूँ।

स्त्रीः इतना ही सच बोलते हो तो अपनी आंखें मुझे दे दो। मैं दही बड़े लेकर आती हूँ।

बच्चाः अरे माई, आपने मांगा भी तो क्या मांगा। आप दही बड़े लेकर आएं, मैं आंखें निकाल देता हूँ।

स्त्री: ये लो दही बड़े। अरे ये तुमने क्या किया। क्यों आंखें निकाल दीं। मैंने तो नाराज होकर कहा था।

बच्चा: आपने मांगा तो मैंने निकाल दिया। अच्छा माई, मैं दही बड़े लेकर चलता हैं।

गुरु मछेन्द्रनाथः अरे गोरख, तुम्हारी आंखों को क्या हो गया है?

बच्चा: (सारी घटना को सुना दिया)

गुरु मछेन्द्रनाथः आओ, मैं अभी मंत्र विद्या से तुम्हारी आंखें ठीक कर देता हूँ। उसके बाद हम सभी बद्रीनाथ की यात्रा पर निकल चलेंगे। वहाँ पहुँच कर हम सभी भिक्षाटन पर निकल जाएंगे। तुम साधना और योग विद्या का अभ्यास करना।

बच्चा: गुरु जी, आपने जो योग विद्या की शिक्षा दी है। उसका ही अभ्यास करना है?

गुरु मछेन्द्रनाथः योग शब्द युज धातु से बना है जिसका अर्थ है जोड़ना। महर्षि व्यास ने योग सूत्र की व्याख्या में समाधि शब्द का प्रयोग किया है। सभी वासनाओं और आसक्तियों को छोड़कर अपने स्वरूप में स्थिर हो जाने को ही योग कहते हैं। ऋक् संहिता में लिखा है:-

यस्माद्दते न सिद्ध्यति यज्ञोपविश्चिचश्चन स धीनां योगमिन्वति

बच्चा: चित्त के दो गुण हैं, वासना और प्राण। क्या इनमें से एक पर नियंत्रण हो जाने से दोनों नियंत्रित हो जाते हैं, गुरुदेव?

गुरु मछेन्द्रनाथः योगहीन कथं ज्ञान मोक्षदि भवति धुवम्र, योगहि ज्ञानहीन न क्षमो मोक्षकर्मणि।

गोरख - ठीक है। मैं इसी स्थान पर बैठकर योग तन्त्र और मन्त्र और साधना करता हूँ, आप सब निकले।

दृश्य परिवर्तन

(गोरखनाथ ध्यान मग्न है, अपनी संजीवनी विधा साधना में लीन है, तभी बच्चों की एक टोली आ जाती है और गोरखनाथ से आग्रह करने लगती है।)

एक बच्चा - क्या तुम हमलोगों की मदद कर सकते हो।

दूसरा बच्चा- देखो न, बहुत देर से हमलोग मिट्टी के लोंदे से गाड़ी बनाना चाहते हैं, और उस पर सवारी भी बिठाना चाहते हैं, पर हम तीनों बना ही नहीं पा रहें है।

तीसरा बच्चा- मेरी मदद कर दो न।

गोरखनाथ- (आंखें खोलते हुए) लाओ दो मुझे, पर तुमलोगों ने मेरी भक्ति खण्डित कर दी, लो गाड़ी बन गई।

बच्चा- गाड़ी बन गई, अब गाड़ी वान भी बना दो।

गोरखनाथ- लो गाड़ी वान भी बना दी और जान भी आ गई।

बच्चें- (उत्साहित होकर उछल पड़ें) यह तो जीवित हो गया, यह चमत्कार कैसे हुआ?

गोरखनाथ- चलो गुरु मछेन्द्रनाथ के पास लेकर चलते हैं, वही इसका कुछ करेंगे।

(सभी बाबा के सभा मण्डली में बैठे है)

गुरु मछेन्द्रनाथः क्या बात है, गोरख?

गोरखनाथः बाबा, ये बच्चे जिद कर रहे थे गाड़ी बनाने की, सो मैंने बना दिया। तब इन्होंने गाड़ीवान बनाने को कहा।, मैंने बना दिया। थोड़ी देर में उसमें जान आ गई। अब मैं इसे क्या करूँ? पर बाबा, ये हुआ कैसे?

गुरु मछेन्द्रनाथः जब बच्चे तुम्हारे पास आए तब तुम वक्र संजीवनी विधा का जाप कर रहे थे। मिट्टी का पुतला बनाते समय तुम्हारी संजीवनी विधा और योगमाया से ऋषि करभुजानाथ का प्राण इसमें समाहित हो गया।

गोरखनाथः अब हम क्या करें, बाबा?

गुरु मछेन्द्रनाथः किसी निसंतान दम्पति को इन्हें दे देना चाहिए, जो इनका लालन पालन कर सके। यह बच्चा बहुत गुणी और ज्ञानी होगा। नाथ सम्प्रदाय के प्रथम गुरु नृपतिनाथ जी हैं जो इस बालक के गुरु होंगे। इस बालक का नाम गहनीनाथ होगा। यह विश्व विख्यात योगी बनेगा। फिर मैं बारह वर्षों बाद इससे मिलने आऊंगा। साधु एक स्थान पर नहीं रहते हैं। और घूम घूम कर भिक्षाटन करते हैं और उपदेश देते हैं। चलो गोरखनाथ, आगे बढ़ा जाए। अलख निरंजन। अलख निरंजन।

द्वितीय दृश्य

नटः गोरखनाथ को शंकराचार्य के बाद दूसरा महिमाशाली व्यक्तित्व और महापुरुष माना जाता है।

नटीः मतलब गोरखनाथ का व्यक्तित्व अत्यंत चमत्कारी था!

नटः बंदौ गोरखनाथ ने चरण कमल चित्तलाय धर्म अर्थ अरू काम मोक्ष बिन प्रयास मिल जाए ।

नटीः प्रथम शताब्दी के पूर्व योगी क्या गोरखनाथ ही थे?

नटः महायोगी गोरखनाथ नवीं दसवीं शताब्दी में अवतरित हुए। इनका समय 600 से 1200 ईस्वी का है।

नटीः यानि बुद्ध के बाद गोरखनाथ ही भारत में सच्चे लोकनायक हुए जिनका प्रभाव राजमहल से लेकर झोपड़ियों तक पड़ा।

नटः हाँ, और जाति, पंथ, सम्प्रदाय की रूढ़ियों को तोड़कर सामाजिक समरसता का मार्ग बढ़ाया।

नटीः यानि ब्रहमचर्य, वैराग्य और साधना द्वारा योगमार्ग को प्रशस्त किया।

नटः तभी तो आज भी गोरखनाथ के योग का जादू सारे विश्व में फैला हुआ है।

नटीः योग शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग दिखाता है।

नटः आओ चलो, हम गोरखनाथ के चमत्कार हो को देखें।

(दृश्य)

(साधु के भेष में एक व्यक्ति डुगडुगी पीटकर संदेश फैला रहा है, साथ में चार पांच पुरुष भी है।)

साधुः सुनो! सुनो ! सुनो! गाँव में एक चमत्कारी बाबा का आगमन हुआ है। जिनकी इच्छा है। कि उनका भिक्षा पात्र अनाज से भर जाए जिससे वो खिचड़ी बनवाकर गाँव वासियों को खिलाएं ताकि कोई भी भूखा ना रहे।

प्रथम पुरुषः वाह, यह तो बहुत बड़ा चमत्कार होगा। चलो सभी से अन्नदान करने के लिए कहा जाए। डुगडुगी पीटकर गाँव वालों को बुलाता हूँ।

दूसरा पुरुषः कहाँ है वो पात्र जिसमें भिक्षा दी जाए?

तीसरा पुरुषः बाबा ने गाँव में एक स्थान पर भिक्षा पात्र रखा है। जहाँ सबको अन्नदान करना है।

(सभी लोग दानपात्र में अन्न भर रहे हैं। पर वह खाली का खाली रह जाता है। सब लोग घबरा कर बाबा के पास जाते हैं।)

प्रथम पुरुषः बाबा, कैसा पात्र आपने रखा है। इसमें हम सुबह से ही अन्न डाल रहे हैं। लेकिन वह तो भर ही नहीं रहा है, साथ ही सारे गाँव का अन्न भी उसमें जा चुका है। अब हम सभी क्या खाएंगे?

बाबा: मैंने पहले ही कहा था। कि ज्वाला माई मांस मदिरा का भोग पसंद नहीं करती हैं। शुद्ध अन्न ही भोजन के लायक होता है।

पुरुषः अब क्या करें, बाबा?

बाबा : जाओ, मेरी झोपडी से अन्न निकाल कर लाओ। और सबमें बांट दो। खिचड़ी बनाओ और भंडारा खोल दो।

दूसरा पुरुषः बाबा की जय हो।

(दृश्य समाप्त)

नटः बाबा ने जहाँ खिचड़ी बंटवाई, उस स्थान का नाम है-गोरखपुर और तब से ही गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर हर मकर संक्रांति को खिचड़ी का भोग लगाया जाता है। और सभी को प्रसाद के रूप में बांटा जाता है।

नटीः गोरखा जिले में एक गुफ़ा है जहाँ गोरखनाथ का पदचिह्न पाया गया है। और उनकी एक मूर्ति भी है। वहाँ हर साल बैसाख पूर्णिमा पर एक उत्सव मनाया जाता है इसे " रोट उत्सव " कहा जाता है।

नटः यहाँ हर वर्ष मेला भी लगता है।

नटीः मंदिर का बड़ा जल्सा कहा जाता है। इसमें दुकान लगाने वाले ज्यादातर बड़े मुसलमान व्यापारी होते हैं। जो यूपी और देश के अलग अलग शहरों से यहाँ आते हैं।

नटः छुआछूत के खिलाफ एक सशक्त प्रयास है।

नटीः गोरखनाथ के प्रधान शिष्य में एक गहनीनाथ और दूसरे चर्पटीनाथ। इसके साथ ही जालंधरनाथ, चौरंगीनाथ, भर्तहरि, कृष्णपाढ़, गोपाचंद, निवृत्तिनाथ, गम्भरनाथ, संत ज्ञानेश्वर आदि योग सम्पन्न अनेक योगी नाथ सम्प्रदाय में हुए हैं।

नटः गोरखनाथ महान योगी के साथ साथ शैव धर्म के प्रचारक भी थे। सम्पूर्ण भारत में इन्होंने नागरिकों को अपनी शक्ति द्वारा शिव भक्त बनाया।

नटीः सही कहा।

नटः आओ चलें। इनकी ज्ञान कथा सुनें और देखें।

नटीः चन्द्र नगरी के जंगल में घर बना कर एक बहुत ज्ञानी महात्मा रहते थे। वहीं चन्द्र नगरी के राजा जो बहुत परेशान रहते थे, महात्मा के पास आए और उन्होंने कहा।

(दृश्य)

राजाः महात्मा जी, मैं परेशान हूँ। आप मेरे महल में पधारें।

महात्माः राजन, मैं कहीं जाता तो नहीं हूँ। आप मुझे अपना दुख बताएं। मैं उसका निवारण करूँगा।

राजाः बस एक बार महल में चलकर देखें, बाबा। मेरे आदर सत्कार में कोई कमी नहीं रहेगी। मैं पुनः विनती करता हूँ।

महात्माः अब चलो। तुम इतनी विनती कर रहे हो। मुझे चलना ही पड़ेगा।

राजाः स्वयंसेवकों।

महात्मा : पूरा महल घूम लिया। पर तुम्हारे महल में अत्यधिक दुर्गंध है। अब मुझे जाने दो।

राजा : पर बाबा, मैं तो यहाँ प्रतिदिन साफ़ सफ़ाई करवाता हूँ। इत्र का छिड़काव भी होता है। फिर दुर्गंध कैसे?

महात्माः यहाँ गृहस्थ आश्रम की गंध है, जो राजन आपमें समा गई है। जो पुरुष मोहमाया में फंस जाते हैं, उन्हें यह सब पता ही नहीं चलता। तुम मेरे पास रहो। मैं तुम्हें ज्ञान करवाता हूँ।

राजाः चलिए बाबा। मैं यहाँ से निकलना चाहता हूँ।

महात्माः चलो मैं तुम्हें कच्चे चमड़े के बाज़ार में ले चलता हूँ। यहाँ चमड़े का सामान मिलता है। आओ चलें।

राजाः पर बाबा, यहाँ तो बहुत दुर्गंध है। यहाँ बैठे लोगों को गंध नहीं आ रही है क्या? या इनके दिमाग में गंदगी घुस गई है?

महात्माः इनके दिमाग में दुर्गंध समा गई है, इसलिए इन्हें दुर्गंध नहीं आ रही है। जैसे आपके जीवन में गृहस्थ आश्रम की गंध समा गई है। और जो वस्तु स्वभाव बन जाए उससे घृणा नहीं की जा सकती है।

राजाः महात्मा, मैं आपकी शरण में आकर ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ।

महात्माः आओ, दर्पण में अपना चेहरा देखो। इससे मैं तुम्हें ज्ञान प्राप्त करवाता हूँ। चेहरा देखो। और सांस छोड़ो, जैसी आकृति बने उससे तत्व को समझो। चौकोर बने- वो पृथ्वी तत्व है। त्रिकोण बने - वो अग्नि तत्व है।

अर्ध चन्द्राकार बने- वो जल जल तत्व है। गोल बने - वो वायु तत्व है। बिन्दु बने - वो आकाश तत्व है। अब मैं तुम्हें रंग और लक्षण बताता हूँ जिससे तुम्हारी शंका का निवारण भी होगा।

प्रथमः- पृथ्वी का रंग हल्का पीला है, स्वाद मधुर है। और मध्यम गति से चलता। है।

द्वितीयः- अग्नि का रंग लाल है जैसे गर्म ज्वाला। लक्षण तेज है और तेज चिंगारी सा चमकता है।

तृतीयः- जल का तत्व सफ़ेद और स्वाद कसैला है।

चतुर्थः- वायु रंग धवल है। और तिरछा चलने वाला है।

पंचमः- आकाश रंग नीला है और स्वाद खट्टा है, पर मोक्ष दायक है।

राजाः जी, अब मैं समझ गया।

महात्माः आओ मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। एक राजा अपने बालपन से ही ईश्वर का बहुत बड़ा भक्त था। जैसे जैसे समय बीतने लगा, उसे राजपाट में मन नहीं लगता था। तब उसने सोचा क्यों न अपने बच्चों को राजपाट सौंपकर मैं जंगल में घर बनाकर रहना शुरू करूँ। वैसा ही किया। दिनभर भिक्षाटन करता था और अपना पेट पालता था। एकबार रोटी का टुकड़ा लेकर जब जाने लगा तब एक महात्मा ने परीक्षा लेने के लिए उसकी रोटी गिरा दी।

राजाः बार बार मेरी रोटी कौन गिरा रहा है। अवश्य कोई संत महात्मा मेरी परीक्षा ले रहे हैं। अब मैं पलटकर इन्हें जवाब देता हूँ। सुनो, मैंने राजपाट सब त्याग दिया है। तुम्हें देने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है।

महात्माः तुमने राजपाट पूर्णरूप से नहीं छोड़ा है। इसलिए त्याग से तुम कोसों दूर हो।

राजाः मुझे त्याग का मार्ग बताएं, महात्मा।

महात्माः देखो राजन, त्याग का रहस्य गहरा है। तुम्हारी तृष्णा अभी भागी नहीं है। घर त्याग दिया पर तुम में वो लगन जागी नहीं है। इसके लिए शिव की शरण में जाना होगा। भगवान भोलेनाथ तुम्हें सारा मार्ग दिखाएंगे। मैं

पृथ्वी पर सोता हूँ। बियाबान में रहता हूँ। धन मेरे पास नहीं है। मैं सदैव भ्रमणशील।

राजाः प्रभु, मैं मुझे अपनी शरण में आश्रय दें।

नटीः क्या गोरखनाथ शादीशुदा थे? देखने में कैसे लगते थे?

नटी: गोरक्षनाथ देखने में बहुत सुन्दर थे, क्योंकि मत्स्येद्रोद्धार के लिए जब गोरक्षनाथ कदली देश गए थे, तो वहां की स्त्रियों ने गोरक्ष के रूप को देखकर, उन्हें मत्स्येंद्र से मिलने नहीं दिया। अपने पास रखना चाहती थीं।

नटी: गोरखनाथ बहुत चतुर, समय देखकर कार्य करने वाले और विभिन्न प्रकार के वेष धारण करने में निपुण थे।

नटीः तभी तो इन्हें विद्याधर भी कहा जाता है। इतना ही नहीं, इन्हें नृत्यकला और मृदंग वादन का भी बहुत ज्ञान था।

नटीः गोरखनाथ के जीवनवृत्त पर प्रामाणिक सामग्री के अभाव में उनके चरित्र और व्यक्तित्व पर प्रामाणिक रूप से कुछ कहना कठिन हो जाता है।

नट : बात तो सही है, पर नाथ सम्प्रदाय को आगे बढ़ाने का काम सदियों से चलता आ रहा है और चलता रहेगा।

नटीः पर उनके लिए प्रेम से बड़ा कोई धन नहीं था।

नटः आओ शिष्य, देखते हैं।

एक दृश्यः-

(मंच पर गुरु गोरखनाथ अपने शिष्यों की टोली के साथ चले जा रहे हैं।)

गुरु गोरखनाथः चलो शिष्यों, कहीं विश्राम कर लिया जाए। धूप कड़ी है।

शिष्यः जी, गुरु जी।

गुरु गोरखनाथः चलो, उस पेड़ की छाया में विश्राम करते हैं।

शिष्यः सभी आ जाओ। उस पेड़ की छाया में विश्राम करते हैं और गुरु जी से एक कथा सुनते हैं।

गुरु गोरखनाथः तुम्हारी यही इच्छा है तो चलो, सुनाता हूं।

पौराणिक समय में एक जंगल में एक पेड़ पर दो सुन्दर कबूतर रहते थे। यानि कबूतर और कबूतरी। अपना घोंसला बना लिया। शुभ समय आने पर कबूतरी ने दो अंडे दिए।

शिष्यः यह तो बड़ा ही शुभ संकेत हुआ।

गुरु गोरखनाथः एक दिन की बात है, दोनों कबूतर अपने बच्चों के लिए दाना चुगने निकल पड़े। उसी दोपहर में एक शिकारी जंगल में शिकार करने आया। शाम तक उसे कोई शिकार हाथ नहीं आया। थक हार कर पेड़ के नीचे बैठ गया। तभी उस पेड़ पर कबूतर के दो बच्चे दिखाई पड़े। शिकारी ने जाल फैला दिया। तभी कबूतर आ गए। घोंसले में बच्चों को नहीं पाकर बेचैन हो गए और इधर उधर देखने लगे। तभी उनकी नज़र शिकारी पर पड़ी। बहुत आरज़ू मिन्नतें कीं। पर शिकारी छोड़ने को तैयार नहीं हुआ। तब कबूतर और कबूतरी ने निश्चय किया कि बच्चों के बिना हमारा जीवन किस काम का है। सब मिलकर मृत्यु को गले लगा लेते हैं।

शिष्यः शिकारी तो बहुत खुश हो गया होगा!

गुरु गोरखनाथः इस कहानी से हमें यही शिक्षा मिलती है। कि इस लोक में हर प्राणी को उतना ही मिलता है जितना उसके भाग्य में लिखा होता है।

शिष्यः और प्रेम से बढ़कर कोई धन नहीं है।

नटीः गुरु गोरखनाथ की मृत्यु कैसे हुई थी?

नटः गुरु गोरखनाथ की मृत्यु नहीं हुई थी। उन्होंने खुद समाधि ली थी। आज भी उत्तर प्रदेश में गुरु गोरखनाथ जी के नाम से गोरखपुर नगर है। और इसी जगह गुरु गोरखनाथ जी ने समाधि ली है।

नटीः गोरखनाथ जी संन्यासी थे। पर संन्यासी का मतलब क्या होता है?

नटः संन्यासी का मतलब पलायन नहीं होता है।

नटी: गोरखनाथ के योग का उद्देश्य है। कि मनुष्य आहार, निद्रा, मैथुन आदि प्रवृत्तियों को योग द्वारा जीतकर शिवत्व को प्राप्त करें।

नट: एक आदर्श योगी भक्त और ज्ञानी है। और भारतवर्ष में एक देवता की तरह उनकी पूजा होती है।

नटी: हनुमान द्वादश रुद्र कहे जाते हैं। यानि वह भी महाशिव के अंश से ही अवतरित हुए हैं।

नट: इनके सम्बन्ध में कहा भी गया है:- अतुलित बल धामं हेमशैला दें।

दनुजवन कृशानुं ज्ञानिनामग्रगव्यम्।

सकल गुण निधानं वानराणामधीशं

रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि ।।

नटी: इनके पशु शरीर से इंगित होता है। कि उन्होंने पशुत्व को जीतकर देवत्त्व को प्राप्त किया है। तभी गोरखनाथ जी के योग का यही उद्देश्य है।

नट: वैभव के साधनों को जुटाकर सुख की लालसा करना व्यर्थ है।

नटी: वैराग्य भावना को धारण करने के बाद ही हम गोरखनाथ जी का और मंदिर के दिव्य संदेश को समझ पाएंगे। जहां महन्तों और योगियों की परम्परा रही है, इसका प्रबंधन एक योगी के हाथ में होता है,।

नटी: यह पद अत्यंत आदरणीय और सम्माननीय होता है।

नट: एक योगी, नित्य साधना पूजा करने के अलावा, वहां वर्ष में मनाए जाने वाले सामयिक पर्वों की व्यवस्था, वहां आने वाले संन्यासियों, अतिथियों की सुविधा और मंदिर में आने वाले एक एक पैसे का उचित व्यय करते हुए योगी जीवन के उच्चादर्शों को पूरी निष्ठा से पालन करते हैं।

नटी: इन महन्तों की परम्परा में कुछ ऐसे महायोगी हुए हैं। जो अपनी आध्यात्मिक गरिमा और योगसिद्धि के लिए अत्यंत प्रसिद्ध रहे हैं क्या?

नट: हा। जैसे बालकनाथ जी सन 1758 से 1786 तक यानि 28 वर्षों तक महन्त रहे। इनके अलौकिक जीवन की अनेक कथाएं हैं।

नटी: बालकनाथ जी के पहले कौन थे?

नटः सही से तो ज्ञात नहीं है पर उनके पहले वीरनाथ, अजबनाथ और पियारनाथ महन्त रहे हैं, जो कि महान् योगी माने जाते हैं।

नटी: गम्भीरनाथ जी को गोरखनाथ जी का अवतार माना जाता है। उन्होंने सुरेन्द्रनाथ के बाद गद्दी संभाली।

नटः गम्भीरनाथ के बाद बहानाथ को चुना गया। और उनकी मृत्यु 1934 में हो गई। तब दिग्विजयनाथ को उत्तराधिकारी बनाया गया। ये मेवाड़ के राजवंश के नान्हू सिंह के पुत्र थे। उन्हें बाल्यकाल में ही गोरखनाथ मंदिर सौंप दिया गया था।

नटी: इनमें अद्भुत संगठन शक्ति थी। इनके प्रभावशाली व्यक्तित्व के प्रभाव से उस समय मंदिर की ख्याति पूरे देश में हो गई थी।

नटः तभी तो गोरखपुर की जनता ने कई बार इन्हें लोकसभा सदस्य बनाकर भेजा। हिन्दू महासभा के अध्यक्ष रहे। 28 सितंबर 1969 को ब्रह्मलीन होने पर उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी अवैद्यनाथ महाराज को पद दिया गया।

नटी: अवैद्यनाथ भी लोकसभा और उत्तर प्रदेश विधानसभा के सदस्य रहे।

नटः अपने जीवन काल में ही उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के रूप में एक अत्यंत युवा को घोषित किया जिनका नाम योगी आदित्यनाथ है।

नटी: 12 सितंबर 2004 के बाद वही उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ ने गद्दी संभाली। इन्होंने अपने पूर्वाधिकारियों महन्त दिग्विजयनाथ और महन्त अवैद्यनाथ की कीर्ति पताका को फहराया।

नटः अपने जीवन काल में लगातार आदित्यनाथ गोरखपुर से लोकसभा सदस्य चुने जाते रहे और चुनाव प्रति चुनाव उनके मतों में वृद्धि होती रही।

नटी: और उन्होंने अपने कार्यों एवं व्यक्तित्व से ऐसी धाक जमाई कि कोई पद न चाहते हुए भी उनके दल के केन्द्रीय नेतृत्व ने उन्हें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के पद पर प्रतिष्ठित किया।

नटी: योगी आदित्यनाथ के घर का क्या नाम है?

नट: इनके घर का नाम अजय बिष्ट है। इनका गांव उत्तराखंड के यमकेश्वर से जुड़ा एक छोटा सा गांव है- पंचूर। यहां अजय बिष्ट के माता पिता और परिवार के दूसरे लोग रहते हैं। पिता तो कोरोना काल में मृत्युलोक को जा चुके हैं। पहाड़ी पर बसा ये गांव और उसपर कच्चा पक्का सा घर जिसमें देहाती परिवार रहता है-अत्यंत मिलनसार।

नटी :- योगी आदित्यनाथ उन्नीस साल सांसद रहे हैं। पर राजनीतिक सफर अब शुरू हुआ?

नट:-संघ से उनमें देशसेवा और प्रकृति प्रेम का भाव जगा।

नटी :-राजनीति में इनका प्रवेश कैसे हुआ?

नट :- बहुत रोचक प्रसंग है। करीब बीस साल पहले गोरखपुरकु मुख्य बाजार गोलधर में गोरखनाथ मंदिर से संचालित इंटरकालेज में पढ़ने वाले कुछ छात्र एक दुकान से कपड़ा खरीदने आए। लेकिन दुकानदार से उनका विवाद हो गया, दुकानदार पर हमला हुआ। तो उसने रिवाल्वर निकाल ली। दो दिन छात्र आंदोलन चला। युवा योगी के नेतृत्व में छात्रों ने उग्र प्रर्दर्शन किया और एस०एस०पी० आवास की दीवार पर चढ़ गए। वह युवा योगी आदित्यनाथ ही थे।

नटी :- अरे हां, इन्होंने कुछ समय पहले ही 15 फरवरी 1994 को नाथ संप्रदाय के सबसे प्रमुख मठ गोरखनाथ मंदिर के उत्तराधिकारी के रूप में अपने गुरू महंत अवैद्यनाथ से दीक्षा ली थी।

नट :- गोरखनाथ मंदिर बावन एकड़ में फैला हुआ है। जिसके महन्त है। योगी आदित्यनाथ। वह उन्नीस वर्षों तक गोरखपुर के सांसद रहे फिर उस्मान के भलदेसू का यह उग्र संत उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बन गए।

हिन्दू ध्वावे देहुरा, मुसलमान मसीत

जोगी ध्वावे परमपद, जहां देहुरा न मसीत

नटी :- मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने यूपी निकाय चुनावों में 16 में 14 शहरो में जीत ने योगी आदित्यनाथ का कद अचानक और बढ़ा दिया। (स्टेज पर मुख्यमंत्री की छवि और पत्रकार बन्धूओं प्रवेश)

पहला पत्रकार :- आप गुजरात गये तो आपकी हिंन्दु वादी छवि की वजह से ही शायद काग्रेस को भी हिन्दूत्व के एजेंडे पर उतरना पड़ा। योगी जी देखिए राम को लेकर काग्रेंस और बीजेपी में विरोधाभास है। कांग्रेस के लिए राम का अस्तित्व काल्पनिक रहा है जबकि हमारे लिए राम आस्था के प्रतीक है।

दूसरा पत्रकार :- अब लोग कह रहे हैं कि आप सरकार का ही नहीं पूरे यूपी का ही भगवाकरण कर हैं, आपकी कुर्सी का रंग भगवा, सड़कों के किनारे और चौराहों का रंग भगवा बसें, कार्यक्रम और सरकारी समारोहों की सजावट भगवा रंग में होने लगी, क्या मायने है इसके ?

योगी जी :- भगवा रंग उर्जा का रंग है, प्रकृति का रंग है। और हम उत्तर प्रदेश को उर्जावान प्रदेश बनाना चाहते है।

तीसरा पत्रकार :- माना जाता है कि धर्म के नाम से हिंसा होती है, असहिष्णुता बढ़ती है। और समाज बंटता है, अब तो लोग धर्म के नाम से ही डरते है।

योगी जी:-देखिए हमारा धर्म सनातन है, यह आदि धर्म हैं, इसमें कट्टरता नहीं हो सकती है।

चौथा पत्रकार :- आप सबेरे तीन बजे उठ जाते है। और रात 11 बजे तक काम करते है, क्या यह एक आम आदमी के लिए मुमकिन है?

योगी जी:- योगी जी इच्छा शक्ति होती है, नीयत ठीक हो तो नियन्ता मदद करता है, प्रदेश के लिए जरूर कुछ करने की इच्छा है,

प्रदेश को आगे बढ़ाना है और मोदी जी के सबका साथ सबका विकास विजन पर काम करना है।

देखिए हम काम ऐसा करना चाहते है और करते है। जिससे भारत विश्व गुरु कहलाये और इसका उदाहरण आपके सामने ही है महाकुम्भ- २०२५ विश्व समागम मेला ।

पत्रकार :- जी, इसका तो एक अद्‌भूत नजारा देखने को मिला।

योगी :- महाकुम्भ की थीम 'स्वर्णिम भारत, विरासत और विकास" है। इस थीम का उद्देश्य भारत को समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करना और विकास के पथ पर आगे बढ़ना तथा जन भागीदारी से कल्याण और आस्था, एकता और परंपरा को जोड़ना है।

पत्रकार :- जी महाकुम्भ भारत की प्राचीन संस्कृति और आधुनिक विकास को एक साथ लाने का प्रतीक रहा है।

रानी दुर्गावती बलिदान गाथा

"प्रथम दृश्य "

[राज दरबार सजा हुआ है। राजा कीर्तिदेव सिंह भवन में माँ भवानी की आराधना करते हुए बेचैन मुद्रा में टहल रहे हैं। आस पास दो तीन ज्योतिष बैठे हैं। कालिंजर राज्य के शासक का जन्म होना है।]

धाय: महाराज की जय हो। कन्या रत्न की प्राप्ति हुई है।
महाराज (असंतुष्ट दीखते हुए): आप सभी लोगों को बधाई। ज्योतिषाचार्य, आपसे विनती है कि फलादेश बताएं।
पहला ज्योतिष: कन्या तेजस्वी होगी। शासक बनेगी, प्रजा का अपार सम्मान मिलेगा।
दूसरा ज्योतिष: इनकी कीर्ति सदा भूमंडल पर स्थाई रहेगी। जीवन में अत्यंत प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।
तीसरा ज्योतिष: इनका दाम्पत्य जीवन संक्षिप्त किंतु श्रेष्ठ रहेगा। व्यक्तिगत जीवन सुख और दुख से भरा रहेगा।
महाराज (सभी को अशर्फ़ी देते हुए): जय हो महाराज।

दृश्य परिवर्तन

[बाज़ार का दृश्य लोगों के बीच भगदड़ मच रही है। तभी वीरांगना के रूप में जिसकी आयु दस वर्ष है, का प्रवेश होता है। साथ में महावत भी है]

दुर्गावती: महावत चाचा, मुझे हाथी से सैर करनी है।
महावत: बिटिया, ये एक जंगली हाथी है। इसे बाँध दूं। फिर दूसरा हाथी खोलता हूँ।
दुर्गावती: मुझे इसी हाथी से सैर करनी है।
महावत: नहीं बिटिया, ज़िद न करो। अभी ये सवारी के योग्य नहीं है।

दुर्गावती: नहीं चाचा, हाथी ही तो है। क्या हम इसके आधार पर चलेंगे या हमारे आधार पर ये चलेगा?

महावत: पहले चलना तो सीख जाए, फिर आपके आधार पर चलेगा।

दुर्गावती: वो आज ही सीख जाएगा और हम इसी से जाएँगे।

महावत: ज़िद नहीं करो, दूसरे हाथी को चुन लो।

दुर्गावती: चुन लिया चाचा। जिसे चुन लिया उसे चुन लिया। आप इसे ले चलिए।

महावत: बेटी तुम देवी हो जो उद्दंड हाथी को देख मचलने लगी, खिलौना बनाने के लिए।

दुर्गावती: ये हमारे देवता भी हैं और सैनिक भी। भला इनसे क्या डरना।

दूसरा दृश्य

[दुर्गावती और सखी रामचेरी अपने कक्ष में आराम करते हुए बातें कर रही हैं।]

रामचेरी: राजकुमारी द्वारा किस तत्व का चिंतन चल रहा है?

दुर्गावती: मैं केन नदी की सुंदरता को याद कर रही हूँ।

रामचेरी: तुम्हें शेरनी के दूधिया शावक याद नहीं आते? कैसे उछलते कूदते माँ के साथ निश्चिन्त होकर खेल रहे थे। माँ सचमुच भगवान होती है। इसी का नाम शैशव है। ख़ूँखार सिंहों का भी शैशव कितना दुलारा होता है।

दुर्गावती: तू जंगल में मुझे पढ़ाने के लिए आई है?

रामचेरी: क्या कोई गंभीर चिंतन चल रहा है। अपने भविष्य का, जो मेरी बातें अच्छी नहीं लग रहीं हैं?

दुर्गावती: चुप नहीं रहेगी?

रामचेरी: क्या चुप के समानांतर चुप रहने की विधि लागू हो चुकी है?

दुर्गावती: रामचेरी, पिताजी नाराज़ हैं।

रामचेरी: भला किस लिए?

दुर्गावती: उस बुढ़ऊ राजा को लेकर।

रामचेरी (हंसते हुए): अच्छा, राजा सरकार? जिन्होंने विवाह का प्रस्ताव भेजा था? यानी हमारे जीजा सरकार बुढ़ऊ हैं?

दुर्गावती: बुढ़ऊ का नख सिख वर्णन तेरी ही जुबान से सुना था।

रामचेरी: अच्छा,तो पुनः पारायण सुनना चाहती हैं?

दुर्गावती: सही सही बताना, कैसे हैं?

रामचेरी: बहुत बड़े राजा हैं। उनके हजारों खेत हैं। भैंसों का कारोबार है। पहले से भी चार रानियाँ हैं। दो रानियों ने तो माला जपकर राजमहल का वातावरण आध्यात्मिक बना दिया है।

दुर्गावती: चुप कर

रामचेरी: राजा ने तुझे चाहा है। तू नवेली महारानी बन कर जाएगी। तेरा राज चलेगा। खानदान के क्षत्रिय हैं। बड़े लजालु हैं। आगे के दाँत गिर जाने के कारण वे बात करने में भी लज्जा करते हैं।

दुर्गावती: क्या दाँत नहीं हैं?

रामचेरी: अरे, हिल कर नहीं गिरे हैं। आखेट में मुख से बाहर हुए हैं। बड़े शिकारी हैं, पर अब शिकार नहीं कर पाते।

दुर्गावती: क्यों?

रामचेरी: दूर का दुंधला दिख़ता है। सिर के बाल भी गायब हैं। कभी कभी तो उन्हें देखकर राजश्री की कल्पना की जा सकती है।

दुर्गावती (ज़ोर से): ऐसे खूसट से मुझे ब्याह नहीं रचाना। चलो, महाराज से मिलते हैं।

(महाराज कीर्तिदेव के सम्मुख जाकर) – मेरी अभिलाषा है। कि मैं मनियागढ़ पर्वत की देवी पूजन हेतु कल जाऊं। रामचेरी और कुछ सैनिकों के साथ मैं भवानी मां के दर्शन कर आऊं।

महाराज: पास के परगने में सिंह का आतंक है, होशियार रहना। सुना है। कि राजा दलपति शाह भी प्रजा रक्षण के लिए सिंह का वध करने आनेवाले हैं। यदि संभव हुआ तो मैं भी मनियागढ़ देवी दर्शन करूंगा। कभी मनियागढ़ कालिंजर का हिस्सा था।

रामचेरी: महाराज, क्या गढ़ा के महाराज दलपति शाह क्षत्रिय नहीं हैं?

महाराज: जिनके हाथ का छुआ पानी ब्राह्मण पी लेता है, उसे हम क्षत्रिय मानते हैं।

दुर्गावती: हमारे गुरुजी ने बताया था । कि क्षत्रिय जाति नहीं है, धर्म है। जब हमें रघुवंशम् पढ़ा रहे थे तब एक श्लोक आया था – क्षतात् त्रायते, इतिक्षति अर्थात जो आपत्ति में रक्षा करे, वही क्षत्रिय है।

महाराज कीर्तिदेव: क्षत्रिय की व्याख्या करना अपनी जगह है। और बिरादरी में किसी को क्षत्रिय बनाना और बात है। दलपति शाह के बारे में संपूर्ण जानकारी नहीं है, किंतु पता लगाया जा सकता है। कल देवी दर्शन जाने की तैयारी करो। वहीं पूरा परिचय प्राप्त होगा।

तीसरा दृश्य

[जंगल में रामचेरी और दुर्गावती चली जा रही हैं। तभी उन्हें जंगली जानवरों की आवाज़ सुनाई देती है।]

दुर्गावती: लगता है। कि कोई जंगली जानवर हांका जा रहा है। रामचेरी,तू डर मत। मैं हूँ ना। देख कैसे धनुष बाण से मैं नाहर का वध करती हूँ। पर,ये तो मर चुका है।

एक पुरुष: देवी,नाहर का वध आपने किया है। इस पर आपका अधिकार है।

दुर्गावती: अपना परिचय पहले दीजिए।

पुरुष: आपकी शिक्षा मुझ से श्रेष्ठ है। मैं गढ़ा राज्य का सेवक दलपति शाह हूँ।

दुर्गावती: आप तो महाराज हैं। फिर इस बात को छुपा क्यों रहे हैं?

पुरुष: वास्तव में राजा प्रजा का ही सेवक होता है। क्या मैं आपका परिचय जान सकता हूँ?

दुर्गावती: कालिंजर के महाराज कीर्तिदेव सिंह की पुत्री हूँ। मुझे दुर्गावती के नाम से पुकारते हैं। मैं यहाँ माँ दुर्गाकी पूजा करने आई थी। आपने

नाहर को मारकर मेरे प्राणों की रक्षा की है। मुझे आज्ञा दें। पिताजी मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

दलपति शाह: आपका अश्व साथ में नहीं है। क्या?

दुर्गावती: मैं पूजा करने निकली थी। पास में ही मेरा पड़ाव है। आपका स्वागत है।

दलपति शाह: नहीं, आज मैं चलता हूँ।

दुर्गावती: रामचेरी, चल शिविर में चलते हैं। बाबा प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

[रास्ते में दोनों मौन हैं। मौन को तोड़ते हुए रामचेरी ने कहा]

रामचेरी: जागो राजकुमारी,जागो।

दुर्गावती: क्या मैं सो रही हूँ?

रामचेरी: तो क्या सचमुच जाग गई हो?

दुर्गावती: ऐसा क्यों कहती हो?

रामचेरी: दलपति शाह गढ़ा राज्य के महाराजा हैं। वे तुम्हें अपलक तब तक देखते रहे जब तक तुम दीखी। पता नहीं आगे का भविष्य कैसा है?

दुर्गावती: क्या सच में हमारी भेंट दलपति शाह से ही हुई है?

रामचेरी: तुम तो मिल कर आई हो। उनका अश्व क्यो नहीं ले लिया। वो तो पहुचाने को तैयार थे।

दुर्गावती: धत ,एक घोड़े में भला दो लोग कैसे बैठेंगे।

रामचेरी: किंतु वे तो तैयार थे।

दुर्गावती: मुझे स्वप्न जैसा लग रहा है। जैसे कोई अनूठा स्वप्न देखने पर शरीर की दशा होती है, वैसी ही मेरी भी दशा हो रही है। मुझे पता नहीं चल रहा है कि मैं पसीने पसीने क्यों हो गई हूँ।

रामचेरी: आज मुझे पता चला कि तू डरना भी जानती है।

दुर्गावती: नाहर को सामने देखकर मैं नहीं डरी। मगर सामने गढ़ा राज्य के महाराज को देखकर मेरा पूरा शरीर कांप गया।

रामचेरी: लगता है। डर का नहीं बल्कि लज्जा का वेग था।

दुर्गावती: न तो कोई डर था। न ही कोई लज्जा की बात थी। किंतु देखने मात्र से ही दिल दिमाग़ काम नहीं कर रहा था। आदर्शपुरुष को मैंने पढ़ा तो है। लेकिन देखा नहीं।

रामचेरी: तू अनुरक्त हो चुकी है।

दुर्गावती: क्या इसे आकर्षण कहते हैं? मुझे लगता है। कि उनके आगे मेरी सारी अकड़ निकल गई। ऐसे ही सिंह पुरुष के सान्निध्य में नारी अपना व्यक्तित्व गढ़ती है।

रामचेरी: तू कम, दलपति शाह अधिक आकर्षित थे। तू तो चल रही थी। चेतना में थी। पर वे तो शाश्वत अचेत थे। ठहरी नदी की तरह वहीं पर अपना सारा अस्तित्व लेकर जम गए थे।

दुर्गावती: ठहरी नदी का क्या तात्पर्य?

रामचेरी: पगली मत बन। ये कहानी तो तूने ही न सुनाई थी।

दुर्गावती (पीछे देखते हुए): कब?

रामचेरी: पीछे मत देखो। वो तुम्हारा पीछा नहीं कर सकते। न उन्हें इतनी जल्दी है। न ही तुम्हें होनी चाहिए। पर मुझे लगता है कि वो तुम्हें पाने के लिए प्रयास अवश्य करेंगे। और एक दिन तुमको अपने घोड़े पर बैठा कर ले जाएँगे। उस समय तू कुछ नहीं बोल सकेगी।

दुर्गावती: बहुत बोलती है तू।

रामचेरी: पड़ाव के सैनिक आ रहे हैं। दोपहर होने को है। आज की पूजा सफल रही अब पेट पूजा।

चौथा दृश्य

[महल का दृश्य राजा कीर्तिदेव और दीवान के बीच वार्तालाप]

कीर्तिदेव: कालिंजर पर यदि आक्रमण होता है। तो हमारा साथ देने वाला अब कौन है? रीवा के बघेल राजा और उचेहरा के परहार में से कोई भी मुग़लों से लड़ने को तैयार नहीं है। दोनों ने अधीनता स्वीकार कर ली है। मुगलों की छत्रछाया में राजा बने रहना चाहते हैं। आक्रमण विहीन सत्ता

के लिए अधीनता ही एक मार्ग है। स्वाभिमान तो नहीं रह जाता, किंतु राज्य आक्रमण से सुरक्षित रहता है। कालिंजर एक स्वतंत्र राज्य है। सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भूभाग है, जिसे अधीन करने को सर्वाधिक लड़ाइयां लड़ी गई हैं। कालिंजर से दक्षिण सुदूर गढ़ा एक विशाल राज्य है। जिसमे अनेक गढ़ हैं। जो अभी तक स्वाभिमानपूर्वक स्वाधीन रहा।

दुर्गावती (छिपकर सारी बातें सुन रही थी): गढ़ा एक बड़ा राज्य है। क्या गढ़ा राज्य से संधिकी जा सकती है? आपसी सहयोग के बिना मुगलों को हराना संभव नहीं है। रीवा और उचेहरा को जोड़ने के लिए प्रयास करना चाहिए।

कीर्तिदेव: यही तो दुर्भाग्य है। यदि कालिंजर,उचेहरा, रीवा और गढ़ा एक साथ आ जाए तो कोई आँख भी उठाकर नहीं देख सकता। किंतु मुग़लो की नीति तो देखो। रीवा बड़ा राज्य है। और उसे विचारशून्य कर दिया। उचेहरा भी रीवा के मार्ग पर चलकर अपने आप को सुरक्षित मानता है। गढ़ा अपनी सीमाओं को प्राकृतिक सुरक्षा के साथ व्यवस्था बनाकर चल रहा है किंतु अकेला है। कालिंजर को पूरब, पश्चिम और उत्तर- तीनों दिशाओं से भय है।

दुर्गावती: क्या कोई नया संवाद मिला है?

कीर्तिदेव: ऐसी कोई बात नहीं है,किंतु साम्राज्य आकार को बढ़ाने के लिए प्रस्थान करना चाहिए।

दीवान जी: गढ़ा राज्य के राजा दलपति शाह मणियागढ़ मेले में आये हैं। क्या उन्हें पता है कि आप यहाँ पर उपस्थित हैं? और...

कीर्तिदेव: पर उन्होंने संदेश नहीं दिया। और उनकी ओर से कोई प्रस्ताव भी नहीं आया है। यदि मुग़लों के विरुद्ध उनका कोई प्रस्ताव आता है, तो विचार करेंगे।

दुर्गावती: गढ़ा नरेश को इस प्रस्ताव हेतु प्रस्ताव दिया जा सकता है।

कीर्तिदेव: अभी समय नहीं आया है। और पहल तो गढ़ा को भी करनी चाहिए। यद्यपि शेरशाह विस्तृत भूभाग वाले और प्राकृतिक रूप से अपराजेय गढ़ा पर पहले आक्रमण नहीं करेगा। उसे पहाड़, नदी, पर्वत में

भटकने का भय बना रहता है। पर कलिंजर तो शेरशाह के लिए छोटा सा लक्ष्य है। यही चिंता है।

दुर्गावती: अब मैं विश्राम करने अपने कक्ष में जा रही हूँ। रामचेरी भी आ गई होगी।

दीवानजी (प्रवेश करते हुए): दलपति शाह के दीवान ने महाराज कीर्तिदेव सिंह को अपने महाराज का निमंत्रण पत्र भेजा है:-

नर्मदे हर

महाराज कीर्तिदेव सिंह जू को दलपतिशाह का सादर अभिवादन!

मुझे आज ही ज्ञात हुआ। कि महाराज सीमा प्रदेश के पार पधार चुके हैं। जो मणियागढ़ मंदिर से बहुत दूर नहीं है। मेरा आग्रह है कि आप हमारे राज्य में पधारकर हमारे राज्य की शोभा बढ़ायें तथा अतिथि सेवा का सुअवसर प्रदान करें। आपका हृदय से स्वागत है। आपकी प्रतीक्षा के निमित्त ही ख़ुश हैं।

आपका
दलपति शाह

पाँचवाँ दृश्य
[एक कक्ष में दुर्गावती और रामचेरी का वार्तालाप चल रहा है।]

दुर्गावती : आज भूख नहीं है।

रामचेरी: भोजन तो करना ही होगा। जो मन करता है , उसे पाने के लिए मन बेचैन होने लगता है। किंतु इच्छा तो इच्छा है और मनुष्य मनुष्य। स्त्री जाति के लिए इच्छायें सिर्फ़ इच्छायें होती हैं। अपने मन से वह मित्र भी नहीं बना सकती है।

दुर्गावती (हंसते हुए): कागज,दवात और कलम ले आ।
रामचेरी: क्या कविता लिखनी है क्या?
दुर्गावती: चित्र बनाना है।
रामचेरी: किसे पत्र लिखना है?
दुर्गावती: तेरे मोहनदास को।
रामचेरी: तुझे कैसे पता कि मोहनदास मेरा है?
दुर्गावती: मैं सब जानती हूँ।
रामचेरी: मोहनदास को तो मैंने सहायक के नाते काम दिया है। कि वह दलपति शाह से मिलवा दे।
दुर्गावती: पगली, उन्हीं को पत्र लिखना है। और तुझे यह पत्र उसके पास भेजना होगा।
रामचेरी: पूरे आकाश में बादल घिरे हैं। भारी वर्षा हुई तो सब अस्त व्यस्त हो जाएगा। कहीं महाराज मना न कर दें।
दुर्गावती: महाराज को मैं समझा दूँगी।
[दोनों बाहर निकल जाती हैं। वहाँ उनकी भेंट मोहनदास से होती है।]

[बगीचे का दृश्य]

मोहनदास: इस वर्षा में कहाँ घूम रही हैं। राजकुमारी कहाँ हैं?
रामचेरी: मैं एक प्रयोजन से आपके पास आई हूँ। राजकुमारी दुर्गावती का पत्र महाराज दल्पति शाह तक भेजना है। यह कार्य आपके अलावा कोई नहीं कर सकता है।
मोहनदास: यह तो मेरा सौभाग्य है। जिस पत्र के कारण मेरी रामचेरी से बात हो सकी, वह पत्र निश्चित ही दुर्गावती को दलपति शाह से मिला दिगत। ठीक है, मैं जाता हूँ।
[मोहनदास दलपति शाह के पास पहुँच जाते हैं।]
मोहनदास: राजकुमारी ने आपके लिए एक पत्र भेजा है।
दलपति शाह: राजकुमारी ने?

मोहनदास: हाँ महाराज। राजकुमारी दुर्गावती का पत्र है।

दलपति शाह: तुम्हें कैसे मिला? और कब मिला?

मोहनदास: अभी अभी दे कर गई हैं। बस कुछ ही दूर गई होंगी।

दलपति शाह: पत्र लाने का पुरस्कार लेते जाओ।

मोहनदास: पुरस्कार तो मिल चुका है।

दलपति शाह: क्या?

मोहनदास: आपके चेहरे की प्रसन्नता।

[दलपति शाह अपने गले से कंठ हार निकाल कर मोहनदास को पहना देते हैं। मोहनदास बाहर निकल जाता है।]

दलपति शाह (पत्र पढ़ने लगते हैं): मैं आपको किस रिश्ते से संबोधन करूँ? जो रिश्ता विवाह के बाद उपयुक्त होता है वही उपयुक्त रहेगा। जिस दिन आप मेरा पाणिग्रहण कर लेंगे, यह हाथ लिखने और जिह्वा प्राण नाथ कहने में समर्थ हो जाएगी, उस दिन की प्रतीक्षा कर रही हूँ। जो विनती रुक्मिणी जी ने द्वारिकाधीश से की है,वही विनती मेरी भी है। यदि मैं आपके योग्य हूँ, अपने व्यक्तित्व, साहचर्य के योग्य मुझे मानते हैं, तो मुझे अपनाकर धन्य करें। यदि ऐसा संभव हो तो मेरा जीवन धन्य हो जाएगा। वरना मेरा जन्म लेना व्यर्थ है।

क्षत्रियों के यहाँ विवाह भी युद्ध जैसे होते हैं। बिना युद्ध के कोई भी कार्य क्षत्रिय करें तो उनको ख्याति नहीं मिलती है। मुझे इस बात का भय बना रहता है। कि क्षत्रियत्व हमारे बीच में कहीं खलनायक न बन जाए। आपके उत्तर को बेचैन।

आपकी दुर्गावती

दलपति शाह: रानी दुर्गावती, मैं आपको लेने आ रहा हूँ।

षष्ठ दृश्य

दुर्गावती(पत्र पठते हुए): और रामचेरी आपके यहाँ से प्रस्थान के बाद मुझे येसा लगा किआप मुझे भी साथ लेती गई हैं। मुझे लग रहा है। कि आप मचान पर बैठी हुई ,धनुष में बाण चढ़ाये शिकार करने को तैयार है। लगता है। मैं फिर से उस कानन में घूम आऊँ,शायद उस पेड़ के नीचे भीगती खड़ी मिल जाओ। जंगल के पत्ते पत्ते में तुम्हारा ही प्रतिबिंब दिखता है । मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा है कि तुम मानवी हो। तुम्हें देखते ही लगा। कि तुम विधाता द्वारा लिखा हुआ सौंदर्य का आलेख हो। मैं यह चाहता हूँ कि गढ़ा राज्य की बनकर हमारे वन प्रदेश और विशाल राज्य को कृतकृत्य करें।

आप अन्यथा न लें, अब आपके बिना मेरा कोई भविष्य ही नहीं दीखता है। यह मेरा शाश्वत नेह निमंत्रण हैं। आप मुझे और गढ़ा राज्य की महारानी का पद स्वीकार करें।

आपका
दलपति शाह

(पत्र पढ़ने के बाद): रामचेरी, यह आकस्मिक प्रणय का आवेग है। मुझे कुछ विचार करना होगा। चलो, दोपहर हो रही है।

रामचेरी: (हँसते हुए): तू यहीं से लौट जा और गंधर्व विवाह कर ले। मैं साथ हूँ।
दुर्गावती: ऐसी बात नहीं करते हैं। बिना पिता की आज्ञा के मैं इंद्र के बुलाने पर भी स्वर्ग नहीं जा सकती। मेरे लिए मेरे पिता जी प्रत्यक्ष देवता हैं।
रामचेरी: तेरे हृदय में नारी धर्म की न्यायपालिका बैठी है। तू तो संस्कार की प्रतिमूर्ति और संयम की तपोभूमि है। ऐसे ललित आग्रह को भी तू

वर्तमान की मर्यादा भूमि पर उतार कर देखती है। तू प्रतिनिधि है। भारतीय नारी की अस्मिता की। मुझे विश्वास है कि कुल गोत्र आदि की विचित्र व्याख्या को पार करके, तू अभीष्ट को प्राप्त करेगी। चलो बातों बातों में शिविर आ गया। भोजन कर ले।

[अंदर कीर्तदेव भोजन कर चुके और सेनापति से बात कर रहे हैं।]

कीर्तिदेव (सेनापति से): दुर्गावती के योग्य वर राजा दलपति शाह ही हैं। किंतु कालिंजर में यह विवाह संभव नहीं हो सकता है। राजाओं के बीच कुल,गोत्र की व्याख्या और आलोचना से अच्छा है। कि गढ़ा में ही दुर्गावती का विवाह किया जाए।

सेनापति: चार दिन बाद राजा दलपति शाह कालिंजर प्रवास पर आ जायेंगे। सेना के साथ उन्हें सुरंग के पास आतिथ्य देना है। वहीं बात हो जाएगी।

कीर्तिदेव: हाँ, वहीं से दुर्गावती की विदाई हो जाएगी। पर जाते ही महोबा के लिए विचार करना होगा। दलपति शाह आ जाते हैं। तब आगे की योजना बनायेंगे।

[एक सैनिक का प्रवेश]

सैनिक: महाराज दलपति शाह का आगमन हुआ है। उन्होंने महाराज से मिलने की इच्छा प्रकट की है।

कीर्तिदेव: उन्हें सम्मानपूर्वक कक्ष में लाओ।

कीर्तिदेव (हाथ जोड़कर): महाराज आपने मेरा मान रख लिया। वास्तव में आपके व्यवहार और निपुणता को देखते हुए मैं दुर्गावती का हाथ आपके हाथों में सौंपना चाहता हूँ। दुर्गावती की माँ नहीं है। मैंने ही माँ बनकर पालन पोषण किया है। आज आपको सौंप रहा हूँ। दुर्गावती अब आपकी हुई। यहाँ विवाह संस्कार नहीं कर सकता। आप अपनी राजधानी में विधिवत विवाह करें तथा अपनी पत्नी के रूप मे स्वीकार करें। मैंने जीवन भर एक पत्नी का व्रत पाला है। और मैं ऐसी ही अपेक्षा आपसे भी

करूँगा। दुर्गावती ने एक राजकुमारी का जीवन नहीं जिया है। उसने शासक का जीवन जिया है। (भावुक होकर) यदि उससे कोई गलती हो जाती है। तो मेरी प्रार्थना है कि उसे क्षमा करेंगे।

दलपति शाह (महाराज के आँसू पोछते हुए): महाराज आप मेरे पिता तुल्य हैं। और आज तो पिता हो ही गए। मैं वचन देता हूँ। कि आपने मुझसे जो चाहा है। उसका पूर्ण निर्वाह करूँगा।

कीर्तिदेव: मैं पुत्री को बुलवाता हूँ। रामचेरी, दुर्गावती को लेकर आओ।

[दुर्गावती और रामचेरी का प्रवेश]

दुर्गावती (पिता की ओर देखकर रोने लगती है): आप तो मेरी माँ और पिता दोनों हैं। आपकी आज्ञा ही मेरा धर्म है।

कीर्तिदेव (रोते हुए): मैंने दलपति शाह को निमंत्रण देकर बुलाया है। वो सेना सहित पधार चुके हैं। आतिथ्य हुआ है। मैं रात्रि में महोबा चला जाऊँगा और दलपति शाह तुम्हें ले करके अपनी राजधानी। वहाँ पर तुम्हारा विवाह संपन्न होगा। हमारी मात्र शुभकामनाएँ रहेंगी। विधाता ने तुम्हारे योग्य वर दलपति शाह को ही भेजा है। कालिंजर भी तुम्हारा है। गढ़ा भी तुम्हारे साथ है। और हम सब तुम्हारे साथ हैं। मेरा सुख तुम्हारी ख़ुशी में है। माँ की एक चिन्हारी माथे की बिंदी मेरे पास रखी है। इसे स्वीकार करो। आशीर्वाद।

सप्तम दृश्य

'(सुबह का समय चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई पड़रहा है।
दलपति शाह,दुर्गावती ,रामचेरी और तीन सैनिक प्रवेश करते हैं।)

दलपति शाह — देवी,आपने जो निर्णय लिया है। उससे दलपति शाह आपका आजीवन दास बन गया है। तुम्हारा स्थान चरणों में नहीं, हृदय में है। राजकुमारी,तुम हृदेश्वरी हो। मैं इस पवित्र माटी के सामने तुम्हें पत्नी के रूप मे स्वीकार करता हूँ। और उसी पवित्र भावना से पाणिग्रहण करता हूँ ,सूर्य,वायु तथा पृथ्वी इसके ग्वाह है। (दोनों निकल जाते है।)

दुर्गावती— हमारी सेना तो हमारे साथ है ।

दलपतिशाह— कालिंजर की सेना?

दुर्गावती— हाँ, एक है सुमेरसिंह नाम का अंगरक्षक ल

दलपतिशाह— क्या चाहता है वह?

दुर्गावती — कालिंजर का राज्य ।

दलपति शाह — आपको भी?

दुर्गावती — हमे तो चाहता ही होगा क्योंकि मैं माध्यम बन सकती हूँ,राज्य प्राप्त करने का।

दलपति शाह— येसा कौन होगा, जो आपको नहीं चाहता हो?

दुर्गावती—- ये तो नहीं चाहने वाले ही बता सकते है।

दलपति शाह— कितने राजाओ का विवाह प्रस्ताव आपने अस्वीकार किया है।

दुर्गावती—- एक को छोड़कर सभी को।

दलपति शाह — वह भाग्यशाली कौन है?

दुर्गावती — भाग्य तो मेरा है। आपकी सहधर्मिणी बनकर प्रजा की सेवा करूँगी।

दलपति शाह: आपका ध्यान प्रजा पर अभी से ही अधिक है।

दुर्गावती: इस बात से ईर्ष्या तो नहीं हो सकती न।

दलपति: आपसे तो मात्र एक ही चीज़ हो सकती है।

दुर्गावती: क्या?

दलपति: अथाह प्रेम।

दुर्गावती: महाराज,आपके विशेषण तो सटीक और चुप करा देने वाले हैं। आप इतनी बड़ी सेना लेकर पधारे थे। क्या युद्ध करने की तैयारी से आये थे?

दलपति: हम बारह हज़ार सैनिकों के साथ आपको लेने आये थे।

दुर्गावती: इतनी तो हमारी पूरी सेना भी नहीं है।

दलपति: आपके पिताजी की यही आज्ञा थी कि हमारी सेना की संख्या से अधिक सैनिक लेकर आयें।

दुर्गावती: क्या पिताजी को युद्ध की आशंका थी?
दलपति: उन्होंने कहा था। कि राज परिवार के षड्यंत्र तथा भीतर घात से इंकार नहीं किया जा सकता है। कई राजा और क्षत्रिय युद्ध कर सकते हैं। इसलिए पूरी तैयारी से आना चाहिए।
दुर्गावती: अर्ध रात्रि को सुरंग के मार्गसे आप तक पहुंचना उचित माध्यम था। यद्यपि आप इस मार्ग से अवगत थे।
दलपति: अवगत तो कालिंजर के दुश्मन भी थे। किंतु असावधान थे। ये तो अच्छा था। कि सुरंग आपके कक्ष में खुल रही थी।
दुर्गावती: रामचेरी और हमारे सैनिकों ने हिम्मत से काम लिया। अंधेरी तथा भयानक सुरंग में प्राणों की बाजी लगाकर सुरक्षित ले आए। रामचेरी को मैंने पानी लाने को भेजा था। गला सूख रहा है।
रामचेरी: आपका गला सूख रहा था। इसलिए पानी लेकर आ गई। आप दोनों पानी पियें। अब जल्द ही हम गंतव्य स्थान पर पहुँचने वाले हैं।
दलपति: पहुँचने वाले नहीं हैं, बल्कि पहुँच चुके हैं। राजकुमारी दुर्गावती आपका गढ़मंडला में हार्दिक स्वागत है। आप अपने शुभ चरण अपने राज्य में अंकित करें और राज्य लक्ष्मी बन कर धन धान्य से भर दें।
दुर्गावती (हाथ जोड़कर): कालिंजर की पवित्र धरती मुझे क्षमा करे और अपनी पुत्री को आशीर्वाद दें। कि मैं आपके गौरव की रक्षा कर सकूँ। जय कालिंजर! शत शत प्रणाम!!

अष्टम दृश्य

(राज दरबार जिसमे कोष प्रमुख, भंडारी, द्वारपाल, उप सेनापति और दलपति शाह तथा रानी दुर्गावती बैठे हैं।)

दलपति शाह — रानी दुर्गावती मैं सभी से आपका परिचय करवा रहा हूँ।
दुर्गावती — प्रणाम, मैं धनुष विद्या,भाला,तलवार के संचालन में निपुण हूँ,जो चाहे मुझसे प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते है।

दलपति शाह— सुमेर सिंह कालिंजर के क़िले में आते जाते रहते हैं। समीप के परगने रेतीगढ़ के क्षेत्रिये है। ,मैं उन्हे दुर्गावती का अंगरकझक घोषित कर रहा हूँ। आज की सभा समाप्त कर रहा हूँ।

नवम दृश्य

(सुमेर सिंह और सेनापति)

सुमेरसिंह— कल शाम में राजकुमारी बहुत हंस रही थी।,मुझे कोई षड्यंत्र दिख रहा है।

सेनापति— राजकुमारी हंस सकती है।,इस बात से तुम्हें क्या लेना देना?

सुमेर सिंह— लेना देना है,मुझे रानी दुर्गावती राजा दलपति शाह के साथ भाग आई है।

सेनापति— बकवास नहीं करो,राजकुमारी के बारे मैं तुम बोलने वाले कौन होते हो?

सुमेरसिंह— हम। छत्रिय है,हमारी मर्यादा पर कोई दाग लगायेगा तो हम उसे मिट्टी में मिला देंगे।

सेनापति— तो बाहर जाओ मिट्टी भी है ,तुम भी हो , मिलाओ जो मिलाना है। हमारा समय व्यर्थ नहीं करो।

सुमेरसिंह—राजकुमारी पर नजर रखना रखना तुम्हारा दाईत्वा है।

सेनापति— मुझे दायित्व मत सिखाओ,अभी भी कहता हूँ,यहाँ से चले आओ।

सुमेरसिंह— मैं यहाँ का होने वाला राजा हूँ,मैं दुर्गावती से विवाह करूँगा।

सेनापति— देखो मेरा मन तुम्हें दंड देने का नहीं है ,पर महाराज के आने पर तुम्हारी शिकायत की जाएगी।

सुमेरसिंह— मैं जाता हूँ,राजकुमारी का पता लगाने,रामचेरी का भी पता नहीं है ,लगता है दोनों भाग गई हैं।

सेनापति— यहाँ चारों ओर पहरा है। दलपति शाह और उनके उनके सैनिक यहाँ नहीं आए हैं, वह अपहरण करके नहीं ले जा सकते।

सुमेरसिंह— कल शाम मैंने दोनों को बात करते देखा है। मुझे लगता हैं। वह स्वेक्छा से गढ़मंडला गई है। आप सेना को युद्ध के लिए तैयार करे। छत्रीय की मर्यादा के अनुसार हमे युद्ध करना होगा।
सेनापति— सेना को तैयार करने में समय लगेगा। किन्तु इससे पहले महाराज कीर्तिदेव से आज्ञा लेनी होगी। यदिमहाराज नहीं है। तो बिना दुर्गावती की आज्ञा के शस्त्र सेना धारण नहीं कर सकती। सेना का दायित्व राजकुमारी की आज्ञा का पालन करना है।
एक संदेश वाहक का प्रवेश — सेनापति जी ,राजकुमारी दुर्गावती कालिंजर राज्य की सीमा के बाहर चली गई है। और उन्होंने दलपति शाह के साथ गन्धर्व विवाह कर लिया है।

दशम दृश्य
(स्वागत गीत)

रामचेरी—-पंडित जी दुर्गावती तैयार है,विवाह मंडप में लेकर आ जाऊ। (दूल्हा दुल्हन की वेश भूषा में दलपति शाह और दुर्गावती का प्रवेश) स्वस्ति वाचन चल रहा है।
परिचारिका— रामचेरी तुम तो चित्रकार हो।
रामचेरी— बाद में बताऊँगी,चित्र भी बनाऊगी ,अभी तो विवाह का समय है। देखो राम जानकी जैसी कल्पना साकार हो रही है।
पंडित जी— विवाह शुरू किया जाय।
मानपुरोहित— महाराज,दलपति शाह और दुर्गावती अब तो पति पत्नी हो गए,बधाई हो ।
दलपति शाह— रामचेरी क्या हमारी रानी को सजना सवरना पसंद है ?
रामचेरी— महाराज,हमारी रानी को सब कुछ पसंद है। , जो हमारी देवीयों को पसंद है। सर्वांग सजना,फूलों के गहने पहनना, दुर्गाजी की पूजन करना, चाँद और सूर्य को एकसाथ देखना तथा भोजन कराना।

दुर्गावती: महाराज, मैंने एक वचन दिया था। कि रामचेरी और मोहनदास का विवाह समतुल्य मुहूर्त में होगा।

दलपति शाह: अवश्य। इसी मंडप में रामचेरी और मोहनदास का विवाह संपन्न होगा। मंगल गीतों के बीच दोनों विवाह बंधन में बंध जाएँगे। मैं आशीर्वाद देता हूँ।

रामचेरी: दुर्गावती, तेरा वह कथन मुझे रात्रि में बार बार याद आ रहा था।

दुर्गावती: कौन सा कथन?

रामचेरी: श्रेष्ठता जन्म से नहीं आती है। गुणों के कारण ही उनका निर्माण होता है। दूध,दही,छाछ, घी एक ही कुल की संताने है। पर उनका मूल्य अलग अलग है। महाराज का समग्र व्यक्तित्व कैसा है?

दुर्गावती: तूने जो आकलन किया था , ठीक वैसा ही है। बल्कि थोड़ा और विनम्र कहना चाहिए। अच्छा छोड़, मोहन कुमार का हाल बता।

रामचेरी: मुझे लज्जा आती है।...।

ग्यारह दृश्य

(नर्मदा के किनारे दलपति शाह और दुर्गावती टहल रहे हैं। आज नर्मदा की पूजा करनी है, दोनों पीले वस्त्र धारण किए हुए है।)

दुर्गावती — आज नर्मदा में डुबकी लगाकर मैं धन्य हो गई। जय माँ नर्मदा।

दलपति शाह (दुर्गावती को देखते हुए)भेड़ा घाट के संगमरमर के भावों पर कोई श्लोक लिखे तो वह श्लोक आपके रूप के समान ही होगा। इस निरभ्र शरद चाँदनी में आपके मन की व्याकरण तथा रस कवि होते तो समझ जाते ,किंतु मैं तो एक असमझ राजा हूँ।

दुर्गावती— महाराज! नर्मदा के जल का स्वर सुनिए। उसमे आपके ही गुणानिवाद मुखरित हो रहे हैं। आपका हृदय प्रणय को अधीर है ,यह महकता हुआ पाषाण संगमरमर भी जान चुका है। आपके अपलक दृग

चाँदनी,जलराशि तथा उस प्रकृति को देख रहे हैं। जिसमे सुकुमारता का जन्म होता है। चकवा-चकवी सटकर चाँद की अर्चना कर रहे हैं।

दलपति शाह —प्रणय को प्रणव में ढालना तो कोई आपसे सीखे। बहुत पहले की बात है। यह नर्मदा तट अत्यंत मनोहर तथा गोप्य था। आकाश मार्ग से विचरण करते हुए गंधर्व दंपति रेवा के सौंदर्य को देखकर मुग्ध हो गए। दोनों स्नान करने लगे ,यह देखकर वहाँ बैठे अवधूत ने उन्हें श्राप दे दिया,कहा तू ने मर्यादा का अतिक्रमण कर दिया।

दुर्गावती— क्या रेवा में स्नान करना कोई अपराध है?

दलपति— बिल्कुल चिंता नहीं करे।

दुर्गावती— मणियागढ़ से सिगौड़गढ़ की यात्रा में मैंने कुछ स्थानों का अवलोकन किया है ,किंतु उस दृष्टि से नहीं देखा,जिस प्रकार से मुझे देखना है।

दलपति शाह— समूचे राज्य का भ्रमण करना जरूरी है ,राजा को अपने राज्य के हर स्थल की भौगोलिक तथा सामाजिक जानकारी होनी चाहिये।

दुर्गावती— महाराज,आपका राज्य विस्तृत है। जिसमे पर्वत,वन,नगर तथा गढ़ों को देखकर मुझे पूज्य ससुर जी के शौर्य एवम पराक्रम से अपूर्व प्रेरणा मिलती हैं।

दलपति शाह — मेरे पिता जी ने जीते जी राजपद मुझे सौप दिया था। उत्साह पूर्वक मेरा अभिषेक संस्कार करवाया। मुझे राजनीति तथा भविष्य की योजनाए समझाई। वे स्वभाव से विजेता थे। और मुझे महाराज के रूप में देखना चाहते थे,बताया था तुम्हारे तथा गढ़मंडला की महारानी बनने योग्य मात्र एक राजकुमारी है। जिसकी तुम्हें प्रतीक्षा करनी होगी। वह राजकुमारी कृतिदेव सिंह कालिंजर के राजा की इकलौती पुत्री है। जिसका नाम दुर्गावती है। जिससे तुम्हें विवाह करना होगा। वंश परम्परा तथा छत्रीय भेद के कारण इसमे संघर्षहो सकता है। साम ,दाम,दंड, भेद चाहे जो भी नीति अपनानी पड़े या राजकुमारी का अपहरण करना पड़े,वह कार्य तुम्हें करना ही पड़ेगा। मैं तपस्या करने माँ नर्मदा की शरण में जा

रहा हूँ, मुझे खोजने का प्रयत्न नहीं करना। नर्मदा तुम्हारी माँ है। सदा इनकी पूजा करना। जिस अश्व से मैं जाऊँगा वह दूसरे दिन लौट आएगा,उसे हमशाला में बाँधना।

दुर्गावती—आपके श्री मुख से हर उच्चारण आनन्दित करता है। कानो में मिसरी घुल जाती है। किंतु शेष कथा को मैंने थोड़ा थोड़ा सुना है।

दलपति शाह — मैंने सुना है। कि आप दोनों हाथों से तलवार चला लेती है। लगता हैं घोड़े के बाग़ को दातों से दबा कर कठोर अभ्यास किया है।,

दुर्गावती— यह तो खेल तमाशा है। महाराज किंतु युद्ध मेरा प्रिय खेल है,जब से यहाँ आई हूँ खेलना बंद है।

दलपति शाह— आप मुझ से तलवार बाजी करेगी?

दुर्गावती — आप मेरा सिर काट लीजिए पर ऐसा मत कहिए,खेल में भी मैं आप पर तलवार नहीं उठा सकती,शेष कार्यो के लिए मैं आपकी दासी हूँ।

दलपति शाह— आप मंत्री हैं। दासी नहीं,आप मेरी चिंता करने वाली हृदेश्वरी हैं।

दुर्गावती— इतने सारे गुण मुझमें नहीं हैं आर्य।

दलपति शाह— मेरा संबोधन मुझे मिल गया,अब आप मुझे महाराज,स्वामी जैसे उबाऊ शब्दों से मुझे संबोधित नहीं करे।

दुर्गावती — किस तरह जंगली जीवन जिया जा रहा है यहाँ? अभाव की पराकाष्ठा है। यहाँ न पहनने को कपड़े है। और न खाने को अन्न है,अत्यंत वन निर्भर जीवन है यहाँ।

दलपती शाह—राज्य का मानचित्र से आपको अवगत करा रहा हूँ,मांडू के बारे में मैंने बताया था। न वहाँ के सुल्तान हमेशा गढ़मण्डला से युद्ध की तैयारी में रहता है।

दुर्गावती — चलिए हम देखने चलते है।

बारह दृश्य

(आग जल रही है, दुर्गावती और दलपति शाह बैठे हुए है साथ ही रामचेरी के साथ एक बूढ़ी महिला भी है।)

दलपति शाह— मानता हूँ नदी अपने उफान पर थी। पर आपको इस तरह नदी में कूदना नहीं चाहिए था।

दुर्गा— नदी में हाथी के पीठ तक पानी पहुँच गया। जल के थपेड़े से हाथी डोल जा रहे थे। इसमे मेरा भी हाथी विचलित हो रहा था। और साथ के हाथी पर सवार महावत का बच्चा हाथी से फिसल कर गिर गया । रामचेरी ने मुझसे पूछा ,आप तो तैर लेती है, मैंने कहा हाँ पर तुम क्यो डर रही हो , तब तक एक परिचारिका ने उचे स्वर में चिल्लाना शुरू कर दिया। फिर क्या था। मैंने अपनी साड़ी को बाँधा और बहते हुए महावत के पुत्र की ओर छलांग लगा दी । उस सेना में एक भी तैराक ऐसा नहीं था। जो प्राण रक्षा कर सके । मैं पानी में हाथ मारती हुई,तीव्र गति से महावत के पुत्र के पास पहुँच गई। और बच्चे को बचा लिया।

दलपति शाह—सत्य ही है एक असाधारण घटना मनुष्य को महान बना देती है। और इसलिये आपकी जय जयकार हो रही है। देवी, प्रकृति दुर्जेय है,यह नियंता की नियति है।

दुर्गावती — एक बार क्षमा कर दीजिए। हमारे तैराक पीछे थे ,बेमौसम सब घटित हो गया। मुझे ऐसा अनुमान नहीं था। मैं अपने आप को रोक नहीं पाई।

दलपति शाह— भविष्य में इन बातो पर ध्यान दिया जाना चाहिये। चलिये आगे की यात्रा प्रारम्भ किया जाय।

दुर्गावती— यह विशाल सरोवर देखकर कहना कठिन है। कि इसके निर्माण में कितना समय लगा होगा? इस मंदिर में किस देवता का स्थान है ?

दलपति शाह — यह स्थान हमारे कुलदेवता भैरव का है। आप रामचेरी के साथ आगे बढ़ें , मैं भी आ रहा हूँ ।

दुर्गावती— रामचेरी देखो,खेतों में महिलाये कैसे सुर में गा रही हैं।

रामचेरी— इनके गीत के भाव है। कि कृष्ण ने राधा से कहा— बादल चुने लगे हैं,अंग भीगने लगे है,हवा चल रही है,फ़सले बढ़ रही है, धरती मगन है। ... सभी देश की अराधना में लगे रहो ।

वृद्ध महिला— (हाथ में गुलेल थी ,रखवाली के लिए)

कहाँ से उतरी हो?

रामचेरी— आकाश से।

महिला—देवी हो?

रामचेरी— नहीं मानवी है।

महिला—लगती तो देवी जैसी हो।

रामचेरी — किंतु है नहीं।

महिला— किंतु ये दूसरी तो साक्षात लक्ष्मी लग रहीं हैं। रामचेरी— है। तो लक्ष्मी ही किंतु नाम दुर्गा है।

महिला—देवी। आपने बड़ी कृपा कि दर्शन देकर,हमारे बगीचा में पधारी। मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। जिससे मैं आपकी सेवा सत्कार कर सकूँ।

दुर्गावती — दोपहर हो गई है। क्या आपने भोजन कर लिया?

महिला— बना लिया है,रखा है।

दुर्गावती—भोजन हम भी करेगे।

महिला— आपके लायक नहीं है।

दुर्गावती —- भोजन में क्या है? महिला— आम का पन्ना और रोटी। मोटा अनाज है।

दुर्गावती— मोटा अनाज हम बहुत प्रेम से खाते है।

महिला— बेटी, अपना ध्यान रखो,मुझे लगता है। कि तुम पेट से हो।

दुर्गावती— (शर्माते हुए) जी माता जी,अब हम चलते है।

दुर्गावती— (शिविर में पहुँच कर)क्या हुआ महाराज,आपके मुख मंडल पर चिंता की लकीरें दिख रही हैं?

दलपति शाह—-चिंता की बात है,कहते हुए संकोच हो रहा है। कि शेरशाह सूरी ने कालिंजर क़िले पर डेरा जमा लिया है ।

दुर्गावती— महाराज,पुष्ट जानकारी क्या है? मुझे बेचैनी हो रही है?
दलपति शाह — जानकारी इतनी ही है।

तेरह दृश्य

(दुर्गावती के गढ़ा और महाराज दलपति शाह के महोबा चले जाने के बाद कालिंजर क़िले में क़ैद सुमेर सिंह परेशान है।)

कृतिदेव सिंह— सुमेर सिंह अब तुम मुक्त हो।
सुमेरसिंह— महाराज अब सब कुछ नष्ट हो गया। दुर्गावती रामचेरी को लेकर भाग गई। और आपकी सेना अगर मदद करती तो छत्रिय कुल की मर्यादा इस तरह भंग नहीं होती।
कृतिदेव सिंह— जो घटना हो गई। उसका स्मरण मत करो,अब आगे की सोचो कि क्या करना चाहिए।
सुमेर सिंह— महाराज, मेरे लिए आपके अलावा कोई शरण नहीं है। कलिंजर को शत्रुओं से खतरा है। और अब तो गोंडवाना भी शत्रु है। हमे अपनी शक्ति बढ़ानी चाहिए। मुगलों के पास तोप ढालने का कारखाना है। हमें भी तोप ढलवाने का कार्य शीघ्र करना चाहिए। शेरशाह इन दिनों जोधपुर तथा मारवाड़ में युद्ध रत है। मालवा के पठानों ने आत्मसमर्पण कर दिया। शेरशाह ने क़िले पर अधिकार करके सब को मृत्यु दंड दिया है। वह मेवाड़ पर आक्रमण कर सकता है। मेवाड़के बाद कालिंजर के बारे में भी सोच सकता है। अब तो गोंडवाना से भी वार्ता नहीं कर सकते हैं।
कीर्तिदेव सिंह: मुझे कुछ वक्त दो सोचने के लिए। मुझे अकेला छोड़ दो।
सुमेर सिंह: जी, महाराज। जैसी आपकी आज्ञा।
(महाराज आत्म चिंतन करते हुए कक्ष में टहल रहे हैं और सोचते हुए बोले जा रहे हैं।)
कालिंजर को पड़ोसी राज्य से सहायता मिलना संभव नहीं नहीं था। गोदवाने से वार्ता नहीं कर सकते। दुर्गावती बहुत सूखी है, मिलने का मन

करता है। पर छत्रिय राजाओ के हँसी उड़ाने और सुमेरसिंह की नाराज़गी से भय लगता है। सुमेरसिंह भी बड़े मनोयोग से कलिंजर का काम कर रहा है, कहीं जान जाने पर शत्रुओं से न मिल जाए,वैसे भविष्य में ऐसा हो सकता है।

कृतिदेव— सुमेरसिंह को बुलाया जाय। गोंडवाना बहुत बड़ा राज्य है। उनकी सेना में छत्रियों और लोदियों की संख्या बड़ी है।

सुमेर सिंह— महाराज दुर्गावती ने जो अपमान किया है। उसे आप कैसे भूल सकते हैं? एक अपात्र के साथ अपने राज्य को छोड़कर चली गई, फिर ये कौन से लड़ाके है? वे तो तुर्को का भी मुकाबला नहीं कर सकते।

कृतिदेव सिंह— मुझे तो सारे योद्धा एकलव्य जैसे शूरवीर दिखाई देते है,साहस के धनी है,पराजित होना नहीं जानते।

सुमेर सिंह— ये तो छोटी जाति के योद्धा हैं।

कृतिदेव सिंह— जो हो गया सो हो गया अब कोई रिश्ता रखना तो नहीं है , मैंने प्रस्ताव में ना भी कर दिया था। किंतु विधाता को जो मंजूर था। वह हुआ।

सुमेर सिंह— शिकार खेलने के कारण ही तो सब गड़बड़ हुई है,दुर्गावती न शिकार खेलने जाती और न उस राजा से भेट होती और न यह सब होता।

कृतिदेव सिंह— दुर्गावती मेरे लिए पुत्री ही नहीं बल्किपुत्र भी है। और इस नाते वह मेरी सहायता कर सकती हैं। यदि शेरशाह पर दोनों ओर से आघात किया जाए तो हमारी विजय हो सकती है। इधर से कालिंजर उधर से गोंडवाना।

सुमेरसिंह— यह कैसे होगा महाराज? सारी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। सभी छत्रियों की नाक नीची हो जाएगी। लोग आपको क्या कहेंगे?

कृतिदेव सिंह— चुप रहो सुमेर सिंह! इन उच्च जातियों में कैसे कैसे लांछित कार्य हुए हैं। तुम्हें पता नहीं है। इन चन्देलों को देखो इनकी उत्पत्ति का इतिहास क्या है? तुम्हें पता है? खैर अभी इस बहस को छोड़ो,हमे लगता हैं। कि गोंडवाना से सहयोग लेने में कोई बुराई नहीं है। गोंडवाना

और शेरशाह को लड़ा दो तो हम बच जाएँगे। वैसे भी हम छत्रिय है,हमारे सामने तो दूसरे खड़े भी नहीं हो सकते। परंतु काम पड़ने पर मनुष्य किससे सहायता नहीं लेता है? इसलिये गोंडवाना से सहायता लेने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिये। इससे हमारा फायदा ही होगा और हमारा फायदा तो तुम्हारा फायदा। हम तो तुम्हारे लिए ही सोच रहे है।

सुमेरसिंह(बेमन से हाँ में हाँ मिला रहा है): पिता जी,आप जैसा करे सब ठीक है ।

कृतिदेव सिंह— गोडवाना को पत्र लिखो और पत्र का जवाब आने तक हमे प्रतीक्षा करनी होगी ।मैं तब तक विश्राम करता हूँ ।

(पत्र का जवाब सुमेर सिंह के हाथ लग जाता है। और वह खोलकर पढ़लेता है।)

महाराज कृतिदेव सिंह जी को दलपति शाह का चरण स्पर्श

आप मेरे पिता नहीं भगवान हैं, आप की कृपा से ही मेरा भाग्योदय हुआ है। यदि आप का आशीर्वाद प्राप्त नहीं होता तो मुझे दुर्गावती जैसी सुंदर जीवन संगिनी कभी भी नहीं मिलती। आपकी दूर दृष्टि तथा योजना से ही हम जातिपाती के फंदे से निकल सके । आपको यह बताते हुए हमे अपार प्रसन्नता हो रही है। कि आप नाना बन गए है ,उनका नाम हमने वीरनारायण रखा है। आपके वंश की कीर्ति दिग्दिगंतर तक फैलाए,आप यैसा आशीर्वाद दे, की पुत्री स्वस्थ और सानंद है। कालिंजर का संकट हमारा संकट है। आपके लिए प्राण प्रण से लड़ेंगे,बस आप आदेश देते रहिए।

आपका पुत्र दलपति शाह

सुमेर सिंह — (पत्र को बंद करते हुए सैनिक को देता है।) कुछ अशर्फ़ी देते हुए इशारे से समझाया कि पत्र महाराज को दे दे।

सुमेर सिंह— महाराज गोंडवाना बड़ा राज्य है। यदि हमारी सहायता करे तो हम शेरशाह से बच सकते है। वैसे भी गोंडवाना की सेना आए या नहीं आये हमारी सेना ही शेरशाह के छक्के छुड़ा देगी। बड़ी तोपे बन रही है, क़िले के प्राचीर भी सुदृढ़ है। हम युद्ध में अवश्य विजय प्राप्त करेंगे।

(कुछ दिनों बाद शेरशाह ने
कालिंजर पर चढ़ाई कर दी ।)

रात्रिमें एक सैनिक ने उस पार से थैली फेकी जिसे गुप्तचर ने प्राप्त कर लिया और महाराज कृतिदेव को दिया। महाराज ने खोल कर देखा जिसमे लिखा था।

कृतिदेव सिंह— कालिंजर के राजा सुमेर सिंह तुम्हारी योजना के अनुसार मैंने युद्ध की तैयारी कर ली है,तुम युद्ध करो किंतु बेटे,हमारे ऊपर गोला नहीं चला देना। येसी जगह गोला चलाना कि हमारा कोई नुकसान न हों तथा हमारी सेना जब पास पहुँचे तो फाटक खुलवा देना। तुम्हारी गद्दी तुम्हें मिल जाएगी। राजा कृतिदेव को या तो क़ैद कर लो या तो हलाल कर दो मुझे कोई दिलचस्पी नही है ।
(कृतिदेव सिंह ने पत्र पढ़कर सुमेर सिंह को बुलाकर दे दिया और कहा) पुत्री गोंडवाना चली गई और तुम्हें मैंने पुत्र माना तो तुमने मेरे बदले में शेरशाह से समझौता कर लिया?
सुमेरसिंह— (महाराज के पैरों पर गिरते हुए कहा।)पिताजी यह शत्रु की चाल है,जानबूझ कर पिता पुत्र को लड़वाना चाहते हैं। आप मेरा सिर काट ले पर मैं कभी आपके साथ ग़द्दारी नहीं कर सकता ।
कृतिदेव सिंह— (पत्र को फाड़कर फेकते हुए।) बेटा,इस पत्र की चर्चा किसी से नहीं करना। युद्ध समीप आ गया है,तोपे आग बरसा रही है,गर्मी के दिन है,लू के थपेड़े चल रहे है। सुनो! जोरदार धमाका हुआ।

सैनिक — शेरशाह की तोप से निकली चिंगारी हवा के झोंके के कारण शेरशाह के बारूद के भंडार में आग लग गई है। और पूरा शरीर के चीथड़े निकल गए,चिल्ला रहे हैं। मैं मर रहा हूँ। पर सेनापति तुम कृतिदेव सिंह को मार देना। और सुमेर सिंह को छोड़ देना।

दूसरा सैनिक (कृतिदेव सिंह के करीब जाकर)— आख़िरी इकच्छा बताओ?

कृतिदेव सिंह — कुछ नहीं।

सैनिक—सुना है,तुम महोबा के पान खाते हो? मंगवा दू क्या?

कृतिदेव सिंह — अब मैं पान नहीं खाऊँगा,तेरी तलवार खाऊँगा।

सैनिक— (गुस्से में आकर) कृतिदेव सिंह लो अब मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर रहा हूँ। (तलवार चलाता है।)अब तेरे लाश के चारों ओर ख़ुशी मनाई जाएगी। और सुमेर सिंह अब तू भी जा, तूने मेरी मदद की , तोपे ढलवाई अब तू रेतीगठ जा और कालिंजार छोड़ दे।

सुमेरसिंह—(मुंह में कालिख पुता हुआ जा रहा है।)अब तो दुर्गावती भी हाथ से गई और कालिंजर भी।

चौदहवीं दृश्य

(पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर दुर्गावती दुखी है, दलपति शाह उन्हें समझाते हैं।)

दलपति शाह— (दुर्गावती को समझाते हुए।) सच में पिता जी की निर्मम हत्या हुई है। इससे हम सभी दुखी है। पर आप महाराज की इकलौती संतान है ,पुत्र भी और पुत्री भी। अब पंडितों को बुलाकर पिता का पिंडदान किया जाय, श्राद्ध किया जाय,तथा उनकी आत्मा की शांति के लिये दान किया जाय। और अब आप शांत हो जाय। वीरनारायण पर भी तो आप को ध्यान देना है।

दुर्गावती—- जी महाराज,अब पंडितों को बुलाती हूँ। श्राद्ध की तिथि भी निकलवानी पड़ेगी। ,अब आप परेशान नहीं हो मैं सब संभाल लूँगी ,आप कुछ थके हुए लग रहे हैं,आराम करे।

(पंडितों का मंत्रोच्चार चल रहा है।)

दुर्गावती—-रामचेरी , कालिंजर के पतन की कहानी सुनकर मन विचलित हो गया। पिता की निर्मम हत्या तथा कालिंजर के पराभव को सुनकर मैं फूट फूट कर रोई।

रामचेरी— आपने जल भी नहीं ग्रहण किया,आप महाराज की इकलौती पुत्री ही नहीं पुत्र भी है।

दलपति— अब आप पण्डितों को बुलाकर पिण्ड दान कराये, श्राद्ध करे ,जिससे उनकी आत्मा को शांति मिले,देखिए आपको उदास देखकर वीरनारायण विचलित हो रहे है।

दुर्गावती — (वीरनारायण को गले से लगा लेती है।) अब मैं आपके पास हूँ ,आप उदास मत हो।

पंद्रहवीं दृश्य

(दुर्गावती और दलपती शाह दोनों अपने अपने विचारो में खोये हुए बैठे हैं। और वीरनारायण खेल रहे है।)

दुर्गावती — क्या सोच रहे है आप?

दलपति शाह — कुछ दिनों से हम सभी बहुत परेशान है। ,चलिए कल शिकार पर चलते है।

दुर्गावती — पर आपकी तबीयत ठीक नहीं लग रही है,आपको तो ताप है। मैं वैध को बुलवाती हूँ।

दलपती शाह — उठने की हिम्मत नहीं हो रही है ,शरीर की सारी शक्ति छीनी जा रही है,जीभ लड़खड़ा रही है। बोलने की सामर्थ भी समाप्त हो रही है।

वैध — नब्ज बहुत धीमे चल रही है,लगता है। इन्हे गहरा सदमा लगा है। फिर भी मैं प्रयास करता हूँ।

दलपति शाह — अपना।।।

वैध — अब प्रयास करना बेकार है , इनके प्राण पखेरू उड़ गए।

दुर्गावती — क्या?

पति की दशा देख
सिहर उठी दुर्गावती
हो जाएगी आप बिन
पृथ्वी की भार सी मैं
हृदय में एक ही धन संचित है।
आपके स्नेह में स्रोत-सा
वही तिरता है मन में ,वाणी में
कर्म ओत -प्रोत सा
क्यो कर रखू मैं शरीर
अलग होकर आपसे
दहक जाएगी देह मेरी
आप संग चिता में ।
अग्नि के सामने की थी
प्रतिज्ञा यही
प्राण का महत्व तो
प्राण नाथ से कम है।
गढ़ नृपेश के बिना
जीवन की कल्पना ही नहीं की
मैंने कभी जब से मिली हूँ।

वीरनारायण — माँ,पिताजी सो रहे हैं। जगा दो जग जाएँगे।

चंद्र सिंह (दलपति शाह के छोटे भाई)— भाभी सब समाप्त हो गया। आपके बिना गोंडवाना राज्य अधूरा हो जाएगा। किंतु कुल की मर्यादा और परम्परा तो निभानी पड़ेगी,आपको सती होना पड़ेगा।

दुर्गावती — अपने ज्येष्ठ भ्राता की अंत्येष्टि पर ध्यान दो,मुझे क्या करना है। क्या नहीं करना, यह मेरे लिये छोड़ दो।

चंद्र सिंह — भाभी जी, आपका यह वेश परंपरा के अनुरूप नहीं है।

दुर्गावती— मुझे अब इसी वेश में राजमाता बनकर रहना है।

चंद्र सिंह—-मैं यैसा बर्दाश्त नहीं कर सकता।

दुर्गावती—- आपको जो अच्छा लगे वह करे।

(सभी लोग कानाफूसी करने लगते है। कि रानी सती नहीं हो रही है।)

रामचेरी— आप कानाफूसी होने दे। ,इस पर ध्यान नहीं दे। मैंने तेजस्वी युवतियों की एक नारी सेना बनाई है।

दुर्गावती—एक जिज्ञासा है। कि पुराण कथा नित्य सुननी चाहिये।

रामचेरी— मैं पुरोहित से बात करती हूँ।

दुर्गावती — कथा के बाद मैं प्रतिदिन सैनिक अधिकारियों से बात करूँगी ,ताकि पूरे राज्य का विस्तार हो।

सोलहवा दृश्य

(आधार सिंह, वीरनारायण और दुर्गावती)

आधार सिंह (दीवान) अकबर ने रानी के नाम एक थैला भेजा है। जो पिंजरे में बंद है।

वीरनारायण —क्या पिंजरे में पंछी है।

दुर्गावती—- आधार सिंह जी,आख़िर पत्र आया है,तो पढ़ना पड़ेगा।

आधार सिंह— (पत्र पढ़ते हुए)रानी दुर्गावती,आप एक औरत क्या चीज़ है। जो राज करे? वीरनारायण बच्चा है। बस नाम का राजा,उसके नाम पर राज्य चलाना बंद करो। आप तो चिड़िया है,चिड़िया पिंजरे में सुरक्षित रहती है। मुग़ल साम्राज्य के पिंजरे में आ जाओ। पिंजरा भेज रहा हूँ। अपने

से बंद हो जाओ वरना ऐसा युद्ध होगा। कि कहीं की नहीं रहोगी न भीतर की और ना बाहर की। यानी न पिंजरे की न गोधवाना की।
अकबर जलालुद्दीन
वीरनारायण — उस दुष्ट की यह मजाल?
दुर्गावती— शांत हो जाओ। उतर देना है,पत्र के उत्तर में उतर भेजा जाय। आधार सिंह जी लिखा जाये। अकबर, तुम रूई धुना करो ,तुम राज्य चलाने लायक़ नहीं हो।

दुर्गावती

पत्र को भिजवा दिया जाये। अब तो युद्ध होगा। और भीषण युद्ध होगा। रामचेरी और मोहन दास आप दोनों चौरागढ़के लिये प्रस्थान करें,रामचेरी जा मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।

वीरनारायण — माता ,आप कैमूर की पहाड़ियों पर शिकार के लिए तो जाये। किंतु मणियागढ़ के क्षेत्र में जाना सही नहीं है।
दुर्गावती — अब तो शिकार मुग़ल योद्धाओ का होगा।
वीरनारायण — मुझसे गलती हो गई बाबा गोप ने मुझ से सुरंग का पता लगवा लिया है।
दुर्गावती — किसी दूत को क़िले के सुरंग का पता नहीं बताना चाहिए। अब मुझे चिंता होने लगी है। महेश ठाकुर,,, की कथा प्रारंभ होने वाली है,बाबा गोप को भी कथा सुनने के लिए आमंत्रित किया जाय ,युद्ध के बाद सभी संतों को जागीर देकर गद्दी प्रदान की जाएगी।
बाबा गोप — आपकी यात्रा किस ओर है?
दुर्गावती— हमारी सेना दमोह के उत्तर के पहाड़ियों पर पहुँच गई है। और उसी सहायता के लिये मैं जा रही हूँ।
बाबा गोप — मैं भी आपके साथ चलूँगा।
दुर्गावती — नहीं मैं जा रही हूँ।

बाबा गोप। (अपने शिष्यों से) तुम्हें जाकर आसफ़ख़ाँ को सूचना देनी है। जिससे वह सुरंग के मार्गको जान सके।

दुर्गावती— लोगो में उत्साह की कमी है। मेरी सेना युद्धस्तर पर पूरी तरह तैयार है। शत्रु सिंगरगढ़ को छोड़कर चौरागढ़ जाने वाले हैं। लगता है छोटे मोटे छापामार युद्ध में आस्फ़ख़ान फ़सकर रह गया है। दो शिष्यों के साथ बाबा गोप भी घायल हो गए हैं।

वीरनारायण — राजवैद्य को बुलवाता हूँ। जो बाबा गोप का उपचार करे ,बाबा गोप ख़ून से लथपथ है ,घाव गहरे है , माता को सूचना भिजवाता हूँ, हाथों से ख़ून टपक रहे है ,खोल देता हूँ,अरे! इनके हाथ में गोदना है। जिसमे इनका नाम लिखा है। सुमेरसिंह,विश्वासगाती ,हत्यारा,पापी,देश द्रोही, दुस्ट।

दुर्गावती— हाँ पुत्र ! वही अधम है।

सुमेर सिंह — (चेतना लौट आई) रानी माँ हमे क्षमा करे। हम गिरकर घायल नहीं हुए है। सैनिकों ने देख लिया तभी नदी द्वार पर सुरंग का पता पूछने वाले मुगल सनिको से युद्ध हुआ।

दुर्गावती — सुरंग का द्वार? पुत्र,इसे साथ ले चले ,नहीं तो मुगल सैनिक इनको मार डाल देगें। सेना आगे बढ़ रही है। मैं इन्हे मार कर आती हूँ।

सुमेर सिंह— मुझे क्षमा कर दे।

दुर्गावती— सरदारो को तैयार होने का आदेश दिया जाय,सभी को गढ़ छोड़ना पड़ेगा आधार सिंह जी।

आधार सिंह — शत्रु की सेना बहुत अधिक है। अपनी सेना के आने की प्रतीक्षा करनी चाहिये।

दुर्गावती — युद्ध आवश्यक है। प्रतिझा नहीं कर सकते। शत्रु की शक्ति निरंतर बढ़ रही है,हमे सामना करना ही होगा,विश्वास रखें ,डरे नहीं,धैर्य ही मित्र है, आप बहादुर है और बहादुर ही विजय के भागी होते है।

सताहरवा दृश्य

युद्ध भूमिका दृश्य

(दुर्गावती, वीरनारायण, सैनिक, आसफ़ ख़ान और बदन सिंह)

दुर्गावती — यह आख़िरी अवसर है,अगर तोपखाना आ गया तो लड़ाई हाथ से गई ही है। पर वीरनारायण और सैनिक अभी थके हुए है ,इनके अलावा काफ़ी संख्या में लोग घायल भी है। किसी को भी युद्ध में जाने की हिम्मत नहीं दिख रही है। इसलिये हमे रात्रि में युद्ध निरस्त करना होगा। आशफ़ ख़ान (चुपके से रानी की बाते सुन लेता है।) मैं बदन सिंह को बुलाकर रानी की योजना बता देता हूँ।

बदन सिंह —- (सुनकर) नाराई नाले के ऊपर एक जलाशय है , जिसमें अभी पानी बहुत है। और उसका बधान कमजोर और छोटा है,यदि युद्ध के समय उसे फोड़ दिया जाय तो नाराई नाले के आस पास के इलाक़े में पानी भर जाएगा। और जब रानी पहाड़ पर जाकर युद्ध करना चाहेगी। तो युद्ध नहीं कर पाएगी। पर यदि दोपहर बाद ऐसा किया जाए तो रानी संहार कर सकती है।

आसफ़ ख़ान— यह काम तुम्हें सौंपता हूँ , तुम बाँध के पास जाओ और जब तोपे लग जाए ,रानी के सैनिक कम संख्या में दिखने लगे और रानी भागकर पहाड़ की शरण लेना चाहे,उसके ठीक पहले बाँध को खोल देना।

बदन सिंह —- ऐसा ही होगा।

दुर्गावती— अपनी सेना हाथी पर लेकर हम जल्द आगे बढ़ें पर नाराई नाला बड़े वेग से बढ़ रहा है। और अब लौटने का समय भी नहीं है। अरे! एक तीर कनपटी पर लग गया,रक्त का फब्बारा बह रहा है। अब वीर हाथी को बैठाओ पैदल ही युद्ध करूँगी।

वीर —माता अभी आप युद्ध करने लायक नहीं है। युद्ध बाद में करेगे।

दुर्गावती— वीर हाथी को बैठाओ,नाले से निकालना कठिन है,किसी जानकार ने बाँध तोड़ दिया है, देखो सेनाये आ रही हैं,युद्ध का आनंद शेष बचा है। मैं दोनों हाथों से तलवार चलाऊँगी,मुगल सैनिक को पछाड़ना ही

पड़ेगा,सर धड़ से अलग करते चलना है। ओह पर गर्दन से लगातार ख़ून बह रहा है।

आधार सिंह — अब युद्ध बंद किया जाए ।

दुर्गावती —— मेरा युद्ध समाप्त है। मेरे शरीर में रक्त नहीं बचा है,शक्ति जवाब दे रही है। ख़ून रिस रहा है,आँखों के आगे अंधेरा छा रहा है। मुगल सेना मेरे सामने जीवित नहीं दिख रही है। पर दूर से सेना बाण वर्षा करती हुई आ रही है। मेरा शरीर म्लेच्छ नहीं छू पाये इसलिये आधार सिंह जी अपनी तलवार से मुझे मुक्ति दे ।देरी मत करे। मेरी आज्ञा का पालन करे ,वीर पहाड़ पर चढ़कर युद्ध की तैयारी करो,तुम्हें अभी लड़ना है।

आधार सिंह—— नहीं। मैं आपको मरने नहीं दूँगा।

दुर्गा— आज तुम मूर्ख हो गये हो,यह जानते हुए। कि मेरे पास अब जीवन नहीं है। ।(दोनों हाथो को जोड़कर वन्दना करते हुए) महाराज ! आपके वचन का पालन किया है। मैंने ,अब छमाँ करे,मैंने सुंदर जीवन जिया है। और इससे सुंदर जीवन नहीं हो सकता,अब खूबसूरत मृत्यु का वरण कर रही हूँ ,समर मरण श्रेष्ठ है। आपको और गढ़ा राज्य की पावन धरा को प्रणाम करती हूँ। । गढ़ा की जय।

नाटक के मंचन से पूर्व किसी परिवर्तन के लिए लेखक से अनुमति आवश्यक है ।